श्री अग्रसेन स्मृति भवन, कलकत्ता-७

राजस्थानी-प्रवाद

संकलन-सम्पादन

डा० मनोहर शर्मा

प्रकाशक

श्यामलाल जालान

मंत्री—श्री रामरक्षपाल झुनझुनवाला स्मृति पुस्तकालय

संस्थापक-संचालक

श्री अग्रसेन स्मृति भवन

पी०-३०५, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७

श्री अग्रसेन स्मृति भवन
द्वारा संचालित विभिन्न प्रवृत्तियाँ

१) श्री श्रीलक्ष्मीनारायण भगवान मन्दिर।

२) सेवा विभाग द्वारा जरूरतमन्द बन्धुओं को राशन-क्रय शिक्षा-शुल्क, पुस्तक, औषधि-क्रय हेतु आर्थिक सहायता।

३) श्रीरामरक्षपाल झुनझुनवाला स्मृति पुस्तकालय एवं वाचनालय (निःशुल्क)।

४) हिन्दी तथा अंग्रेजी टाइप तथा आशु लिपि का निःशुल्क प्रशिक्षण।

५) बही खाता लेखन का व्यावहारिक प्रशिक्षण।

६) विवाह आदि सामाजिक उत्सवों में भवन का उपयोग।

७) बाहर से आने वाले यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था।

८) वस्तु भण्डार के माध्यम से—बर्तन, गद्दे, तख्त, सिंहासन, छत्तर आदि की व्यवस्था।

९) सभागार में समय समय पर विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अनुष्ठानों की व्यवस्था।

१०) श्री कल्याण आरोग्य सदन के तत्त्वाधान में होमियोपैथिक औषधालय द्वारा निःशुल्क चिकित्सा।

११) सत्साहित्य प्रकाशन। आदि आदि

जय अग्रसेन

प्रकाशकीय

राजस्थानी भाषा और साहित्य को प्रचारित, प्रसारित तथा उसके प्रति सहृदय पाठकों में अभिरुचि जागृत करने का हमारा यह चतुर्थ प्रयास है। 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' के नाम-रूप से प्रकाशित स्मारिका को साहित्य जगत ने अपनाया। इससे प्रेरित होकर हमने 'धोरां रो संगीत' नामक काव्य पुस्तक तथा 'राजस्थानी मनोविनोद' के रूप में चुटकुलों का प्रकाशन किया।

प्रस्तुत पुस्तक प्रवाद संकलन के रूप में राजस्थान के लोक जीवन की विविध रंगीनियों को अपने में संजोये हुए है। 'वरदा' के यशस्वी सम्पादक डा० मनोहर शर्मा ने उक्त पत्रिका में समय-समय पर अनेक प्रवाद प्रकाशित किये, जिनकी गणना सात शतक तक पहुँच गई है। हीरक कणिका के रूप में इनमें से कुछ प्रवाद हम विज्ञ पाठकों की सेवा में भेंट कर रहे हैं।

आशा है लोक संस्कृति की इस भागीरथी में अवगाहन कर आप आह्लादित होंगे।

विनीत

श्यामलाल जालान

दीपावली संवत् २०३७

डा० मनोहर शर्मा

भूमिका

काफी समय हुआ जब डा० कन्हैयालालजी सहल की 'राजस्थान के ऐतिहासिक प्रवाद' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई तो उन्होंने उसकी एक प्रति मुझे दी और उस प्रकाशन पर स्पष्ट सम्मति देने के लिए कहा। मैं पुस्तक को पढ़ने के लिए बैठा तो वह मुझे इतनी सरस और रोचक लगी कि एक ही बैठक में उसे समाप्त करके ही दम लिया।

अगले दिन श्री सहलजी को उनकी पुस्तक के बारे में इस प्रकार अपनी सम्मति दी—"इस संग्रह ग्रन्थ में सांस्कृतिक प्रेरणा की तीव्र धारा तो आदि से अंत तक प्रवाहित है ही परन्तु साथ ही यह असाधारण रूप से रोचक और आकर्षक भी है। फलतः राजस्थानी साहित्य की गौरव-वृद्धि में यह पुस्तक निश्चय ही एक महत्त्वपूर्ण वस्तु सिद्ध होगी।"

इसी क्रम में आगे यह भी प्रकट किया कि प्रकाशित पुस्तक में मात्र ऐतिहासिक प्रवाद ही संकलित किए गए हैं, जो निश्चय ही महत्त्वपूर्ण हैं परन्तु राजस्थान में इस प्रकार के कल्पित प्रवाद भी तो बहुत बड़ी मात्रा में प्रचलित हैं, जिनका संग्रह-सम्पादन नहीं हो पाया है।

इस पर श्री सहलजी का उत्तर था कि यह काम आप सम्पन्न करें, यह आपके जिम्मे है।

उसी दिन से राजस्थानी जनता में प्रचलित लौकिक प्रवादों का संग्रह शुरू कर दिया गया और आगे चलकर उनके सात शतक 'वरदा' (राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ-राजस्थान की त्रैमासिक शोधपत्रिका) में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किए गए। अब भी यह प्रकाशन-क्रम चालू है। ज्यों-ज्यों प्रवाद-शतक प्रकाशित होते गए पाठकों की ओर से प्रशंसात्मक पत्र मिलते गए और इस दिशा में उत्साह बढ़ता गया।

प्रस्तुत प्रकाशन अर्थात् 'राजस्थानी प्रवाद' में उन्हीं सात शतकों में से चुने हुए प्रवाद संकलित किए गए हैं और उनको अलग-अलग विभागों में प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया गया है, यद्यपि विभागीकरण में कोई कठोरता नहीं रह पाई है।

ध्यान रखना चाहिए कि यहाँ 'प्रवाद' से ऐसे कथासूत्र का अभिप्राय है, जिसके साथ कोई पद्य अवश्य जुड़ा हुआ हो। प्रसंगानुसार ऐसे पद्यों की संख्या एक से अधिक भी हो सकती है। इस प्रकार 'प्रवाद' और 'कथा' में अन्तर रखा गया है। 'प्रवाद' एक कथासूत्र मात्र है, जबकि 'कथा' में छोटी या बड़ी एक समग्र 'वस्तु' होती है। संस्कृत की बोध कथाओं के समान राजस्थान में भी ऐसी बहुसंख्यक छोटी-छोटी कथाएँ प्रचलित हैं, जिनका सार एक पद्य के रूप में प्रकट किया गया है। उदाहरणार्थ कुछ ऐसे पद्य देखिए—

१—करता कै संग कीजिए, सुण रै राजा भील।
सोनै कै घुण लागगो, तो छोरै नैं लेगो चील॥

२—तूं सेठाणी, मैं पांडियो, तूं वेस्या, मैं भांड।
तेरै जिमाये अर मेरै जीमे में, धूळ पड़ी ए रांड॥

३—हाथ तेरै, पग तेरै, मिनख की सी देह।
क्यो कैवै रै बांदरा, तूं घर क्यूं नां कर लेह॥

४—तूं है माता बावळी, भैंस गई है रावळी।
मैं हूँ खाती सैंसो, वो ही कुहाड़ों, वो ही वैंसो॥

इसी प्रकार यद्यपि 'प्रवाद' का प्रयोग 'कहावत' की तरह वार्तालाप के प्रसंग में होता है परन्तु फिर भी उसे 'कहावत' से एक भिन्न विधा समझना चाहिए क्योंकि 'प्रवाद' के पद्य के साथ 'कथासूत्र' जुड़ा रहता है, जैसा प्रायः कहावतों में नहीं होता।

कहना न होगा कि ऐसे 'प्रवाद' अर्थात् प्रसंगात्मक पद्य राजस्थान, गुजरात में काफी पुराने समय से लोक प्रचलित हैं और जन-साधारण ने उनमें बड़ी रुचि ली है। आचार्य हेमचन्द्र, आचार्य सोमप्रभ एवं आचार्य मेरुतुंग आदि जैन विद्वानों ने इन पद्यों को अपने ग्रंथों में स्थान देकर प्राचीन राजस्थानी लोक साहित्य के अनुसंधान-कर्त्ताओं का बड़ा उपकार किया है। उदाहरण-स्वरूप आगे दो पद्य दिए जाते हैं, जो आज भी राजस्थान तथा गुजरात में किसी रूप में लोक प्रचलित हैं—

१—वायसु उड्डावन्तिअए, पिउ दिट्ठउ सहसत्ति।
अद्धा वलया महिहि गय, अद्धा फुट्ट तड़त्ति॥
(काग उडावण धण खड़ी, आयो पीव भड़क्क।
आधो चूड़ी काग गळ, आधी गई तड़क्क॥
कामण काग उडावती, पीयु आयो झबक्यां।
आधो चूड़ो कर लगी, आधी गई तड़क्यां)॥

२—ऊग्या ताविउ जहि न किउ, लक्खउ भणइ निघट्ट।
गणिया लब्भइ दीहडा, के दहक के अट्ठ॥
(खा ले, पी ले, खरच ले, लाखो कहै सुघट्ट।
गिण्या दिहाड़ा पावसी, के दस्सा के अट्ठ॥
लाखो केह माण्या नहिं, छते-हुते सैण।
दियाडा दस आठ में, को जाणै हो केम)॥

लोक-प्रचलित साहित्य-सामग्री में काल भेद एवं स्थान भेद से रूपान्तर प्रकट होना सर्वथा स्वाभाविक है। यही कारण है कि वर्तमान में प्रचलित एक ही राजस्थानी प्रवाद अनेक रूपों में लोक-मुख से सुना जाता है। उदाहरण देखिए—

एक व्यक्ति की खटिया टूटते-टूटते एकदम खतम हो गई परन्तु उसका एक 'पाया' किसी तरह घर में पड़ा रह गया : उसने सोचा कि इस 'पाये' को बेच दिया जाय तो ठीक ही है। वह अपना 'पाया' लेकर नगर की गलियों में निकला और इस प्रकार आवाज लगाई—

ईस कोनी, सेरू कोनी, तीन कोनी पाया।
बीच झावर झोलो कोनी, माचो ल्यो रै भाया॥

रूपान्तर

दोय-ईस नहीं, दोय सेरू नहीं, अर तीन नहीं टिकावू।
बीच को झाबर झोलो नहीं, यो पिलंग है बिकाऊ।।

इतना ही नहीं, कई ऐसे लोक-प्रचलित पद्य भी हैं, जिनके साथ जनता ने अपनी ओर से कोई विशेष प्रसंग जोड़कर उसे विशेष सरस बना रखा है। उदाहरण के लिए निम्न दोहा देखिये—

खाया सो ही खरचिया, दिया सो ही अत्थ।
जसवंत भुंइ पौढाड़िया, माल पराये हत्थ।।

इस दोहे में प्रयुक्त 'जसवंत' शब्द को देखकर इसे जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह की योग-साधना के साथ जोड़ दिया गया और एक नई चीज खड़ी कर ली गई (देखिए पृष्ठ १३-१४)। यही स्थिति हेम हेड़ावू विषयक निम्न दोहे की है—

लालां करचा बिछावणा, हीरां बाँधी पाज।
कांटै मोती पो गयो, हेम गरीब-निवाज।।

इस दोहे के नवीन प्रसंग हेतु पृष्ठ १३ पर दिया गया 'प्रवाद' संख्या २८ द्रष्टव्य है। ऐसी स्थिति में ऐतिहासिक कहे जाने वाले 'प्रवादों' की ऐतिहासिकता भी विचारणीय समझी जाने योग्य है। उस सामग्री में वैज्ञानिक इतिहास कितना है और कल्पना की मात्रा कितनी है, यह विश्लेषण और विवेचन द्वारा ही जाना

जा सकता है, क्योंकि मूलतः यह सम्पूर्ण सामग्री लोक-साहित्य का अंग है। इस संग्रह में ऐतिहासिक कहे जाने वाले प्रवाद केवल नमूने के रूप में कुछ थोड़े से ही दिए गए हैं और प्रायः लौकिक अर्थात् कल्पित सामग्री को ही संकलित किया गया है।

स्पष्ट ही इस सामग्री की सबसे बड़ी विशेषता इसकी विषय-विविधता है। समाज और जीवन का ऐसा कोई अंग नहीं, जिसके बारे में अनेक प्रवाद प्रचलित न हों। यहाँ तक कि पशु-पक्षियों के बारे में भी अनेक प्रवाद बड़े चाव से कहे सुने जाते हैं। जीवन को सरस करने हेतु इस साहित्य सामग्री की बड़ी उपयोगिता है। वार्तालाप में इसका प्रयोग करके वक्ता अपने कथन को एक प्रकार से प्रमाण पुष्ट भी बनाते हैं। एक बार सुन लेने मात्र से ही यह स्मृति में जम जाती है और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैलती रहती है। इस प्रकार यह साहित्य-सामग्री जीवन का अंग बनकर उसे पुष्ट और सरस बनाने का काम करती है। अतः इसका महत्व निर्विवाद है। प्रकाशक संस्थान ने इसे संग्रह रूप में प्रस्तुत करके अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है। आशा है, संस्थान का यह प्रकाशन-क्रम सतत जारी रहेगा।

मनोहर शर्मा
सम्पादक—'वरदा'

राजस्थान साहित्य समिति
बिसाऊ (राजस्थान)
दि० १८ सितम्बर १९८०

राजस्थानी-प्रवाद

❀ ख्यात विख्यात ❀
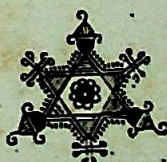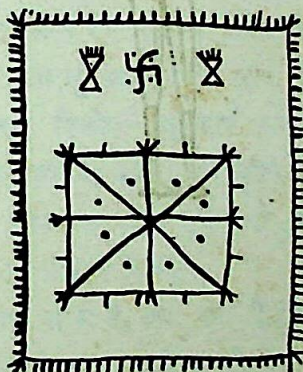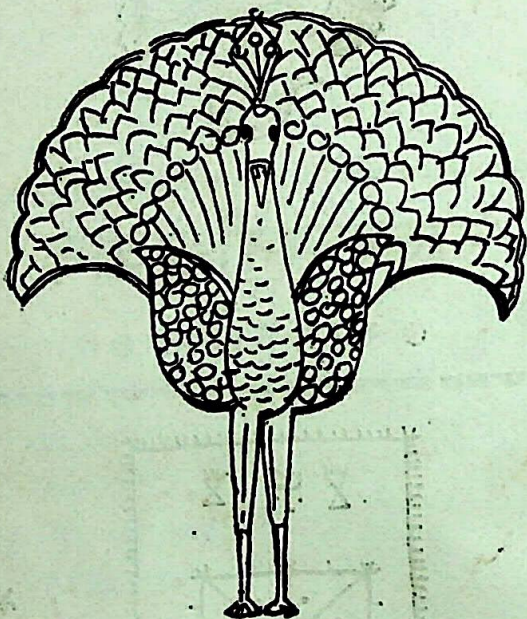
भगवान बावनो रूप धार कर राजा बळ न जांच्यो, जद राजमाता मोद मानर बोली—

भली भई मैं ना बळी, वहलोचन रै साथ।
मेरो बळ ऐसो हुयो, हरजी मांड्या हाथ॥

(बळ=राजाबलि। वहलोचन=विरोचनः बलि के पिता)

: २ :

राजा बलि मन में घणो ऊँचो मतो कर्‌यो पण आखर भगवान की मरजी होई सो ही काम आई—

मन चिंती होवै नहीं, हर चिंती ततकाल।
मतो कर्‌यो बैकुंठ को जा बैठ्यो पातळ॥

: ३ :

श्रीकृष्ण भगवान संधि रो प्रस्ताव लेयर कौरव-सभा में गया अर पांडवां नै कम सूं कम पांच गांव देवण री मांग करी। दुर्योधन उत्तर दियो—"तूं म्हारै घर रो है तो तेरी बात राखण नैं मैं पांडवां नै सोळा सो बीघा रोड़ा धरती दे सकूं हूं। श्रीकृष्ण बोल्या—पांडु डूंगर री धरती लेयर के करसी ? जद दुर्योधन जवाब दियो—

जब लग धड़ पर सीस है, तब लग देवूं न क्यार।
धड़ सैं सीस न्यारो हुयां, चाहे सारी लेवो संभाळ॥

: ४ :

द्रौपदी रा केस खिंच्यां पछै भगवान चीर बधायो, जद वां नैं द्रौपदी इणभांत ओळमों दियो—

पहली केस खिंचायकर, पछै बधायो चीर।
आयो लाज लुटायकर, आखर जात अहीर॥

: ५ :

अज्ञातवास में पांडू राजा विराट रै घरां गुप्त रूप में रैवता। इण दिनां महारथी अर्जुन वृहन्नला नांव धर राख्यो हो अर नारी-रूप में रैवतो। एक दिन कैरू-दळ आयर विराट री गायां घेरी, जद द्रौपदी अर्जुन नैं बोली—

कर री चूड़ी गेर दे, द्रग अंजन धोय डार।
आया मन रा भावता, सब सिणगार उतार॥

: ६ :

रथ में बैठकर अर्जुन भारत जुद्ध करण चाल्यो, जद हिरण बायां आया। सूण खोटा सोचर अर्जुन रथ रूकवायो। उण समै सारथी रूप में भगवान श्रीकृष्ण इण भांत अर्जुन नैं समझायो—

हर बड़ा कै हिरणां बड़ा, सुगन बड़ा कै श्याम।
अरजन, रथ नैं हांक ले, भली करैगो राम॥

: ७ :

जादव आपस में लडर पूरा हुया। बस लुगायां बाकी रैयी। अर्जुन वांनैं लेवण नैं हथनापुर सैं दुवारका आयो।

[दो]

सारो साथ चाल्यो। मारग में भीलां री धाड़ पड़ी। सारी लुगायां खोस र भील लेग्या। महाभारत विजेता अरजन रै हाथ में गाण्डीव धर्‌यो ई रैयगो—

समै बड़ो बळवान है, नरको के बलवान।
भीलां लूटी गोपका, वै अरजण, वै बाण॥

: ८ :

एक जणो बोल्यो—

राज गए नैं राजा भूरै, बैद गए नं रोगी।
मरे पुरख नैं कामण भूरै बूँद गई नैं जोगी॥

दूसरो आदमी जबाब दियो—

राज मिलंतां राजा रोवै, बैद मिलंतां रोगी।
सेज चढंती कामण रोवै, भीख मिलतां जोगी॥

(भरत राज पायर रोयो। दशरथ कैकेई सं इलाज करायर वाचा दिया अर पिसतायो। पांडू री रानी माद्री धणी कनैं जायर रोई। सीता री भीख लेयर आखर रावण कुटुम्ब खपायर पिसतायो।)

: ९ :

भिखै रै दिनां देसूंटै में जावतां एक गूजरी राजा नळ नैं छाछ खातर नटगी। गूजरी रो गरब देखर राजा नळ उण नैं बोल्यो—

गरबै मतना गूजरी, देख मटूकी छाछ।
नव सै हाथी घूमता, नळ राजा रै बास॥

: १० :

ब्रज भोम में टींट (कैर) को विस्तार देखकर लोग भगवान नैं भी ओळमों देवण सैं कोनी चूक्या—

उलटी गत गोपाल की, गई सिटल्लू मांय।
काबल में मेवा किया, टींट बीरज के मांय॥

: ११ :

रामायण को सार सुणो—

राज करंतो राजा रोवै, तपसी रोवै बन में।
पुतर जनम कै मायड़ रोवै, देखो रामायण में॥

: १२ :

जनसाधारण मांय कवियां की समालोचना का दूहा घणा सुहावणा मिलै। तुळसीदास की बाबत दूहो सुणो—

तुळसी-तुळसी के कहो, तुळसी बन को घास।
किरपा भई रघुनाथ की, हो गयो तुलसीदास॥

: १३ :

लाखोजी भात भरण खातर चाल्या, जद मारग रै बिरछां न भी वेस उढावता गया। वै एक वणराय रै जोहड़ै पर विसराम लियो अर झाड़ियां नैं चूनड़ी उढाई। वणराय [भोत सोवणी लागी। जद लाखोजी गरबायर बोल्या—वणराय, कदे दूसो भी कोई आयो हो के, जिको तेरी सारी झाड़ियां नैं चूनड़ी उढाई होवै? लाखोजी रा या बोल सुणर वणराय उत्तर दियो—

लाखै सरिसा लख गया, अनड़ सरीसा आठ।
हेम हेड़ावू पावणा, आया रूदे न बाट॥
लालां कर्‌या विछावणा, हीरां बांधी पाज।
कांटै-कांटै मोती पो गयो, हेम गरीब-निवाज॥

(अनड़ गायां रै चरण खातर बणराय छोड़ी ही अर हेम हेड़ावू आपरी हीरा मोती री पूरी बाळद धरती पर बिखेर कर आनन्द मनायो हो।)

: १४ :

लाखोजी, लाखोजी री राणी अर वां री बेटी बैठ्या हा। दासी काम करै ही। लाखोजी संसार री अनित्यता पर दूहो कैयो—

खाले, पीले खरचले, लाखो कहै सुघट्ट।
गिण्या दिहाड़ा पावसी, केदस्सा के अठ्ठ॥

ओ दूहो सुणर लाखैजी री राणी बात नै सुधार कर दूजो दूहो कैयो—

आठां नैं दस दूर है, समझ पिया नां होय।
सांझे देख्या मुळकता, भोर जो मूवा जोय॥

मायतां री बात नैं बेटी फेर सुधारी अरतीजो दूहो कैयो—

लाखोजी भूल्या लाख बार अम्माजी बर दोय।
नां जाणूं पळ एक मैं, पहरो किण रो होय॥

अब दासी सगळां री बात सुधारी अर ओ दूहो कैयो—

धी अंधी, अंधो लखो, अंधी उणरी जोय।
सांस बटावू पावणो, आवण होय, न होय॥

: १५ :

सागर में चांद री छांया देखर राधा श्रीकृष्ण नैं ओ दूहो कैयो—

दध सुत तो नीचै बसै, मोती-पित रै बीच।
ओ फळ मांगै राधका, क्रिस्न करो बकसीस॥

(उदधि सुत = चन्द्रमा। मोती पित = मोती का पिता : समुद्र। चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब समुद्र में दिखाकर राधा कृष्ण से उसे ला देने का आग्रह करती है)

श्रीकृष्ण ओ दूहो सुणर बोल्या—

मोती मांगो द्यूं घणां, हीरा द्यूं दस-बीस।
ओ तो कुळ में एक है, कहा करूं बखसीस॥

: १६ :

भैरजी भाटी जैसलमेर में बड़ा दानी होया। एक बर एक चारण जांटी पर चढ्यो लूंग तोड़ै हो। भैरजी उंच-चढ्या आया अर चारण नैं पूछ्यो—"तेरै कनैं ऊंट कोनी पछै तूं लूंग क्यूं तोड़ै है?" चारण अणजाण उत्तर दियो—"मैं अठै लूंग तोड़ लेस्यूं अर आगै भैरै भाटी कन्नैं ऊंट मांग लेस्यूं।" भैरजी बोल्या—"जे बठै ऊंट न मिलै तो?" इतरी सुणर चारण यो दूहो कैयो—

छीर समंदर नां घटै, गोरख हटै न ज्ञान।
जे भैरो भाटी नटै, तो टूट पड़ै असमान॥

इतरी सुणतां ही भैरजी आप रो ऊंट चारण नैं भेंट कर दियो अर खुद पैदल चल्या गया।

[छः]

: १७ :

गारबदेसर रा ठाकर किसनसिंघजी ऊंचा भगत होया। एक बार वणां रै गांव मांय मेह कोनी बरस्यो। हळ खड्या कोनी होया। एक रात घणी ऊंडी बिजळी चिमकी। लोग बोल्या-ठांकरां, बिजळी तो है पण ऊंडी घणी। ठाकर बिनती करी—

सो कोसां बिजळ खिवै, जांसैं किसो सनेह।
किसनै की तिसना मिटै, आंगण बरस्यां मेह॥

दूसरै ही दिन जोर को मेह होयो, अर हळ चालगा।

: १८ :

राम-लिछमण मुनि कनैं बाण विद्या सीखता, जद रामचंदरजी आप रै छोटै भाई नैं समझायर कैयो—

राम कवै सुण लिछमणां, ताक लगावो तीर।
उतर्‌या पाछै नां चढै, नरां गिरवरां नीर॥

: १९ :

एक बारठजी नै भेंट कोनी मिली तो महाराणा भीमसिंघजी नैं सवारी निकळी जद सुणायर जोर सूं बोल्यो—

भीमा तूं भाठोह, मोटो मगरां मांयलो।

महाराणा ओ बोल सुणर तत्काल भेंट देई। अब बारठजी बात बदळर आगै बोल्या—

कर राखूं काठोह, संकर ज्यूं सेवा करूं।

: २० :

फतैपुर रो नबाब एक तेलण नैं महलां में दाखल करी। अब तेलियां रो रंग जमग्यो अर खानजादां री कदर घटगी—

देखो खेल खुदाय का, के के पलटै रंग।
खान जादा खेती करै, तेली चढै तुरंग॥

(फळ ओ हुयो कै फतैपुर री नबाबी समाप्त हुई अर राज्य सीकर रै तळै आयगो।)

: २१ :

अल्लाउद्दीन खिलजी आपरै उमराव महिमा साह पठाण पर नाराज हुयो, जद पठाण दिल्ली सूं भागर रणथंभोर रै राजा हम्मीर कनैं सरण लीनी। अल्लाउद्दीन घणो ई जोर लगायो, मेरो चोर संभळावो पण हम्मीर सरणागत नैं सरण दी अर अंत समै तक आपरो पण नीं छोड्यो—

सिंघ रमण, सत्पुरख बच, केळ फळै इकवार।
तिरिया तेल, हम्मीर हठ, चढै न दूजी वार॥

: २२ :

नागौर री विजय रै बाद राव चुंडाजी आपरै राज्य की व्यवस्था नई राणीजी पर छोड़ दी तो खरचो कम करणै री नजर सूं घोड़ां नैं दियो जावण वाळो घी राणीजी बंद करवा दियो। या स्थिति देखर रावजी आपरी राणीजी नैं बोल्या—

कलह करे मत कामणी, घोड़ां घी देतां।
आडा कदेक आवसी, वाढेली बहतां॥

राणीजी तत्काल इण भांत जबाब दियो—

आक बटूकै, पवन भख, तुरियां आगळ जाय।
मैं तनैं पूछूं सायबा, हिरण किसा घी खाय॥

: २३ :

दिल्लीपत अकबर चित्तौड़ पर चढर आयो, जद जैमल अर पत्तो भोत वीरता दिखाई। अकबर बैरी रा भी घाव सराव-णियो हो। चित्तौड़ जीतर अकबर आपरी राजधानी आगरै आयो, जद द्वार पर दो हाथियां पर जैमल और पत्तै री पूरी आदम क़द दो मूरत पत्थर री बणवाई—

जैमल बड़तां जीवणो, पत्तो डावै पास।
हिन्दू चढिया हाथियां, अड़ियो जस आकास॥

: २४ :

उदयपुर रा महाराणा जगतसिंघ खुद बडा दानी हा। वै उदयपुर (शेखावाटी) रै अधिपति टोडरमलरी दानशीलता री चर्चा सुणी तो बारहठ हरिदासजी नै वणां री जांच करण खातर उदयपुर (शेखावाटी) भेज्या। टोडरमल जी खुद गुप्त रूप में कविराजा री पालखी आप रै कांधै पर उठाई अर घणो सनमान करेलो। कविराजा भोत-भोत राजी हुया अर यो दूहो कैयो—

दोय उदयपुर ऊजला, दोय दातार अटल्ल।
एक तो राणो जगतसी, अर दूजो टोडरमल्ल॥

: २५ :

पारवती अर लिछमी को संवाद सुणो—

उमा कहै हे लिछमी, सूमां रै किम जाय।
दाता पंडत सूरमा, थार क्यूं नां आवै दाय॥
सूर करै रंडापणो, दाता दे पर-हत्थ।
पंडत घर सोकड़ वसै, इम रहूं सूमां सत्थ॥

: २६ :

रामचंदरजी बन में रहता। चौमासो आयो जद लिछमण देख्यो कै एक बुगलो बिरछ पर बैठ्यो रैवै अर तळै धरती पर कोनी उतरै। बुगली आप कै धणी बुगलै नै चुग्गो ल्या कर देवै। इन्है ने देखर लिछमण कह्यो, "ईं नर बुगले को संसार में धरकार जीवणो है, जिको लुगाई को ल्यायो खावै है अर मोज से बिरछ पर बैठ्यो है।" या बात बुगली नैं सुणी जद बुगली लिछमण नैं जबाब दियो—

धर रितवंती जाण पिय, यो जाण्यों सहु जग्ग।
तिण कारण हो लिछमणा, पावस बैठो बग्ग॥

(यो बुगलो एक पत्नी को व्रत लियां है अर सारी धरती नै ऋतुमती मान कर तळै पग कोनी मेलै)

: २७ :

राधाजी आप कै हाथ में तूंमड़ी लेकर भगवान नैं पूछ्यो, या के चीज है ?—

राधा जी के हाथ में, अजब फूल एक सेत।
राधा पूछै कृस्न नैं, कृस्न नाम नहिं लेत॥

भगवान आपकै मुख सैं तू मड़ी (तूं मरी) कहणो ठीक कोनी समज्या। जद तरकीब सैं उत्तर दियो—

संतां के नित कर बसै, जीव जड़ी एक मूळ।
कृस्न कवै हे लाडली, वां फळ कै यो फूल॥

: २८ :

हेमजी राजपूत कै घर में घाटो हो पण सुभाव में दातारी ही। एक दिन एक बारठ हेमजी की कोटड़ी आयो अर हेमजी नैं जांच्यो। उण बखत हेमजी कन्नै थोड़ी सी जुंआर ही और कुछ भी कोनी हो। बारठ आपको गाबो बिछायो अर हेमजी की बेटी लालां पल्लै में जुंवार घाल दी। जुंवार बिखरण लागी जद हेमजी की दूसरी बेटी हीरां पाळ सी कर दी। बारठ जुंवार की गांठड़ी बांधी। सागै बारठ को बेटो कांटो हो। हेमजी आपकै बेटै कै कानां की लूंग कांटै कै कानां में पहरादी। बारठ हेमजी की कीरत गाई—

लालां कर्‌या बिछावणा, हीरां बांधी पाळ।
काँटै मोती पो दिया, हेम गरीब निवाज॥

: २६ :

एकबर वीरदास वीठू घूमतो-घूमतो जाळौर आ पूग्यो। उण दिनां जाळौर में बिहारी पठाणां रो राज हो। नबाब साहब बड़ा दानी हा। बीरदास तळाव पर आयर आपरा गाबा धोवै हो। एक घुड़सवार नेड़ै सुं नीसर्‌यो जद उण रै छांटा लागग्या। घुड़सवार झाळ-भर्‌यो बोल्यो—"अरे

कुट्टण बंद कर।" तत्काल वीरदास उत्तर दियो—"कुट्टण तेरो बाप।" इतरी सुणतां ही घुड़सवार म्यान मांय सूं तरवार काढी तो वीरदास नै ठाह पड़ी कै यो ही जाळौर रो नवाब है। जद कविराजा री वचन-चातरी इण भांत परगट हुई—

कुट्टण तेरा बाप, जिकै सीरोह कुट्टी।
कुट्टण तेरा बाप, जिकै लाहोरी लुट्टी॥
कुट्टण तेरा बाप, जिकै वायड़गढ़बोया।
कुट्टण तेरा बाप, जिकै घूमड़ा धबोया॥
कूटिया प्रसण खागां किता, झंझै अर सांकै धरा।
मो कुट्टण मत कह कमालखां, तूं कुट्टण किणियागरा॥

इण वचन-चातरी सं नवाब घणो राजी हुयो अर कवि नैं 'रंगरेळो' (रस रो प्रवाह) नांव देयर उण रो खूब सनमान कर्‌यो। ता पछै कवि रो नांव 'रंगरेळो' ही चाल पड़्यो।

: ३० :

लोकवाणी में महावीर दुर्गादास राठौड़ री कीरत सुणो—

माई एहड़ा पूत जण, जेहड़ा दुरगादास।
बांध मुंडासो राखियो, बिन खंभै आकास॥

: ३१ :

मल्हार राव होलकर री बड़ाई रा दोय दूहा देखो—

सिंघां सिर नीचा कर्‌या, गाडर करै गलार।
अधपतियां सिर ओढणी, तो सिर पाघ मल्हार॥ १॥
अइ हो बखत मल्हार रा, अइ हो बखत अबीह।
गरजण लाग्या गाडरी, डरपण लाग्या सीह॥ २॥

एकबर पुसकर मैं जैपुर रा महाराजा जयसिंघ अर जोधपुर रा महाराजा अभयसिंह भेळा मिल्या। इसै मोकै दोनूं सिरदारां री सही कविता सुणावण रो कविराजा करणी दानजी नैं हुकम हुयो। जैपुर महाराजा आप रै बेटै नैं मार्‌योड़ा हा अर जोधपुर महाराजा आप रै पिता नैं मार चुक्या हा। कविराजा दोनूवां री एक साथै कीरत सुणाई—

पत जैपुर जोधाण पत, दोनूं थाप-उथाप।
कूरम मार्‌यो डीकरो, कमधज मार्‌यो बाप॥

: ३३ :

बादशाह औरंगजेब री सेना जद खंडेलै मंदर तोड़ण खातर आई तो छापोली रा सुजानसिंघ शेखावत आपरै थोड़ै सै साथियां नैं लेयर शाही सेना रो मुकाबलो कर्‌यो अर आपरै जीवतां मंदर तोड़ण कोनी दियो। महावीर सुजान सिंघ री कीरत इण भांत आज भी गाई जावै है—

झिरमिर झिरमिर मेहा बरसै,
मोरां छतरी छाई।
कुळ में है तो आव सुजाना,
फोज देवरै आई॥

: ३४ :

जोधपुर महाराजा जसवंतसिंघजी रो ओ हुकम हो कै जदकद वां रो सरीर छुटै, वां नैं जिसा भी गहणा-कपड़ा

वै पहर्‌यां होवै, उणां समेत ही दाग दियो जावै। एक बर जसवंतसिंघजी महल में बैठ्या ही समाधि चढाय ली अर लोग वां नै देखर विचार लियो कै महाराजा शरीर छोड़ दियो। तत्काल वां रा कीमती गाभा अर गैणा उतार लिया गया अर साधारण कपड़ा पैरायर धरती पर सुवा दिया गया। जद वां री समाधि टूटी तो वै आप रो हाल देख्यो। सारी बात मालूम हुई, जद ओ दूहो कैयो—

खाया सो ही खरचिया, दिया सो ही अत्थ।
जसवंत भुंइ पोढाड़िया, माल पराये हत्थ॥

: ३५ :

एक जणो सूण को दूहो बोल्यो—

सदा भवानी दाहिणी, सनमुख देव गणेश।
पांच देव रिछया करै, बिरमा बिसनू महेस॥

दूसरो पांच सूण इस मुजब कह्या—

सदा भवानी दाहिणी, धर्‌यो बगल मैं आटो।
पांच चीज सागे रहवे, चकळो वेलण पाटो॥
(दूहे में भवानी से तात्पर्य तलवार से है।)

: ३६ :

सायरां देवतावां की जात को बखाण इस भांत कर्‌यो है—

ब्रह्मा जात कुम्हार की, शिवजी जात फकीर।
राम जात को रांगड़ो, कृष्ण जात को हीर॥

: ३७ :

देहात का लोग सूणां को पूरो विचार राखै सूणां की एक बात सुणो—

एकली हिरणी दूजो स्याळ।
भैंस चळ्यो मिळ्ज्या गूवाल ॥
तीन कोस तांई मिळ्ज्या तेळी।
तो मौत जाण ले सिर पर खेळी ॥

: ३८ :

राजस्थानी ख्यात रै लेखक मुंहतै नैणसी रा पिता जयमलजी बड़ दानी होया वै सदा साधुवां नैं जलेबी खुवाता नैं अर घणा राजी होता। समै पायर जयमलजी देवलोक होया। पछै संतां नैं जलेबी कुण खुवावै—

परालबध पलट्या परा, दीजै किण नैं दोस।
जयमल जलेबी ले गयो, साधां करो संतोष ॥

: ३९ :

जोधपुर नरेश महाराजा जसवंतसिंघ आपरै दीवान मुहतै नैणसी पर किणी कारण सूं नाराज हुयर एक लाख रुपयां रो जुरमानो कर दियो पण दीवान खुद नै बेकसूर मानर यो अर्थदण्ड मंजूर कोनी कर्‌यो अर इण भांत उत्तर दियो—

लाख लखारां नीपजै, बड़ पीपळ री साख।
नटियो मुंहतो नैणसी तांबो देण तलाक ॥

: ४० :

जोधपुर महाराजा तखतसिंहजी रै नाहरकरण, बाघजी, हंसराज ऊंचै पदां पर हा ओर ढेलड़ी तथा मैनां दासियां ही। राज काज री हालत देखर एक बारठजी इण भांत वरणन कर्‌यो—

नारां, बाघां, ढेलड़ी, हंसा मैनां नाम।
महाराज तखतेस रै, करै जिनावर काम॥

: ४१ :

पाबूजी राठौड़ राजस्थान में लोकदेवता रै रूप में पूज्या जावै है—

पाबू कहूं कै परसराम अरजन कहूं कै भींव।
तेरा परवाड़ा, कुण गिण्या, धन धांधल का भींव।
चोर न चोरी कर सकै, बैरी तकै न सींव॥

: ४२ :

लाखो फूलाणी डाही डूमणी नैं पीठ फेर कर भोत घणो धन दियो, पण डूमणी सारो इ धन कन्हैं ई दह हो, जीं में गेर दियो। लाखो अचरज कर्‌यो अर पछै मुंह आगे कर कै डूमणी नैं पान को बीड़ो दियो। जद डूमणी राजी होकर बीड़ो ले लियो अर दूहो सुणायो —

लाखा लख दह जाय, जो दीजै मुख बंकड़ै।
जो दीजै सो भाय, पान कट्ठकै रै करां॥

राजा भोज भेष बदल कर रात नै नगरी में घूमै हो। काळीदास कै घर में ल्हुक कर देख्यो, काळीदास की पंडताणी रूसी बैठी ही अर आप कै धणी सें जिदकर राखी ही, जे मूंड मुंडावै तो मुख सैं बोलूं। काळीदास हार कर मूंड मुंडा लियो। राजा भोज सारी लीला देखर आप कै महल में आयो। अठै राजा की राणी रूसी बैठी ही अर ज़िद कर्यो, जे घोड़ो बण कर पीठ पर चढ़ा कर महल में राजा फिरै तो राणी बोलै। काळीदास भी राजा सें रात में मिलण आयो अर लुक कर देखै हो। राजा हार मानी अर घोड़ो बण कर राणी नै आपकी पीठ पर चढ़ा महल में फिराई। काळीदास सारी लीला देखी अर चुपचाप आपकै घरां गयो। दूसरै दिन राजा भोज सभा मांय काळीदास को ढंग देख कर बोल्यो—

गंगा गयो न गोमती, ना थारै घर मूवो।
भोज पूछै रै पांडिया, तूं भद्दर किण पर हूवो॥

राजा का बोल सुण कर काळीदास उत्तर दियो—

ऊपर चढ़ गई संखणी, मुख कड़ियाळा दीया।
चौदा विद्या डूबगी, हिणहिण क्यां पर कीया॥

राजा बात टाळ दी। और कोई नैं बात को भेद कोनी पायो।

[सत्रह]

: ४४ :

खेतड़ी का राजा अभयसिंध बीमार होया। एक बर वांका बेटा बखतावरसिंघ आप कै पिता का पग दावै हा। राजा जी आपका पग समेट लिया। कँवर बखतावरसिंघ बोल्या— "पग सीधा करल्यो"। राजाजी बोल्या—'सीधा कोनी होवै, बाघोर अड़ै है'। बखतावरसिंघ सेना लेकर बाघोर पर चढ़ाई करी अर आपको अधिकार करकै पिता की मनस्या पूरी करी—

पातळिये अलवर लई, माधव रणथंभोर।
रामचन्द्र लंका लई, बखतावर बाघोर॥

: ४५ :

लौकिक आदर्श को एक पद देखो—

एक जणो इसो तप्यो, दूजो तप्यो न कोई।
एक जणो इसो कूद्यो, दूजो कूद्यो न कोई॥
एक जणो इसो बैठ्यो, दूजो बैठ्यो न कोई।
एक जणो इसी ल्यायो, दूजो ल्यायो न कोई॥

(ध्रुव, हनुमान, गणेश, भगीरथ)

: ४६ :

उदयपुर रा महाराणा जगतसिंह बड़ा दानी हा। एक चारण आपरी दानशीलता नैं देखर यो दूहो कैयो—

सांई करे परेबड़ा, जगपत रै दरबार।
पीछोलै पाणी पिवां, कण चुग्गां कोठार॥

: ४७ :

एक जणो बोल्यो—

गंगा बराबर जळ नहीं, सूरज बराबर जोती।
भाई बराबर बळ नहीं, तिरिया बराबर हेती॥

थे बोल सुण कर दूसरो आदमी उत्तर दियो—

इन्दर बराबर जळ नहीं, नैण बराबर जोती।
भुजा बराबर बल नहीं, अन्न बराबर हेती॥

: ४८ :

मुगल बादशाह शाहजहां को बखसी सलावतखां नागौर नरेश अमरसिंघ राठौड़ नैं क्रोध में आयर गंवार कह दियो, जिण रो नतीजो भरे दरबार में इण भांत परगट हुयो—

इण मुख तैं गग्गो कह्यो, इण कर लई कटार।
वार कहण पायो नहीं, जमदढ हुय गई पार॥

: ४९ :

महाराणा प्रतापसिंह एक बर आपरै परवारी लोगां रै संकट नैं देखर अकबर बादशाह सूं सुलह करणै री सोची तो या खबर सुणर महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ (बीकानेर) महाराणा नैं यो सोरठो लिखर भेज्यो—

पटकूं मूंछां पांण, के पटकूं निज तन करद।
लिख दीजे दीवाण, इण दो मंहली बात इक॥

महाकवि रो संदेश सुणर महाराणा संभळगा अर इण भांत उत्तर भिजवायो—

खुशी हूंत पीथल कमंध, पटको मूंछां पांण।
पछटण है जेतै पतो, कलमां सिर केवाण॥

: ५० :

बीकानेर रा महाराजा रायसिंह मुगल बादशाह अकबर री सेवा में दक्षिण देश में गयोड़ा हा। उण भोम में एक दिन फोग रै झाड़ नैं देखर महाराजा गद्गद् हुयर बोल्या—

तूं तो देसी रूंखड़ो, म्हे परदेसी लोग।
म्हांनैं अकबर तेड़िया, तूं क्यूं आयो फोग॥
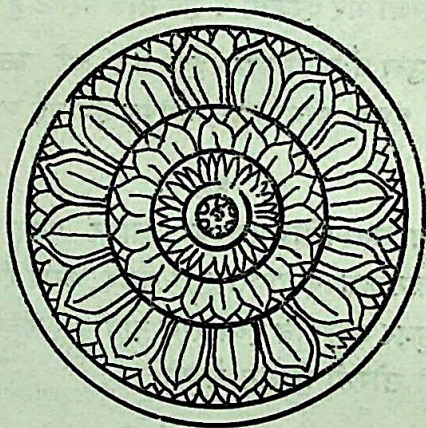
रीति-नीति

एक बारठजी रै कोई चिन्ता लागी । वै उदास रैवता । संयोग सैं एक जणो बारठ जाणर कोई कविता सुणावण री कही । बारठजी कविता सुणाई—

चित्त हो सुचित्त, घर में हो वित्त ।
राजा हो मित्त, जद उपजै कवित्त ॥

: २ :

एक घर में दो जुंवाई आया । एक धायो हो अर दूजो भूखो । धनवान नैं भीतर जीमण बुलायो अर सीरो-पूरी परोस्या । गरीब नैं बारै बिठायो अर खावंण नैं थूली घाली । बारलो जंवाई भीतर हाळै रा सीरा-पूरी देख र बोल्यो—

भीतर पुरसै सीरो-पूरी, बारै पुरसै थूली ।
के तो म्हारा भाग पोचा, के परोसण हाळी भूली ॥

यो बोल सुणर एक जणो बोल्यो—

नां तो थारा भाग पोचा, नां परोसण हाळी भूली ।
मूंडो देखर टीका काढै, मार लपालप थूली ॥

: ३ :

पुराणी लोक-धारणा में पांच प्रकार रै मिनखां नैं कुत्ता बताया गया है—

कुत्तो, जो कुत्ते नैं पाळै, कुत्तो, जो कुत्ते नैं मारै ।
कुत्तो, जो भैण घर भाई, कुत्तो, जो सासरै जुंवाई ।
बो कुत्तो सब में सिरदार, सुसरो फिरै जुंवाई लार ॥

: ४ :

दो जणां बैठ्या बतळावै हा। एक जणो गांव-जुवांई रो हाल सुणायो—

पांच कोस रो आणो-जाणो, बीस कोस रो बडो ठिकाणो ।
तीस कोस माथै रो मोड़, गांव-जुंवाई गंडकरी ठोड़ ॥

दूसरो आदमी घर-जुवांई री दसा बताई—

दूर जुंवाई फूल बरोबर, गांव-जुवांई आदो ।
घरां जुवांई गधै बरोबर, चाहे जैयां लादो ॥

: ५ :

एक वाणिए रो दिन लोटगो। बुरो हाल हुयो बो आप रै सासरै पूंच्यो पण कोई पिछाण्यो कोनी। वाणियो आप क्यूं भी बतायो कोनी। सासरै में बो भट्टी झोकण रो काम लेयर पेट भरै लग्यो। कई दिनां पछै पाछो आप रै घरां आयो। दिन बावड़्यो। धन कमायो। जद फेर सासरै गयो। अबकै सगळा भोत मनवार करी, जद बाणियो बोल्यो—

माया तूं है सुलखणी, नाम हुयो जगराम ।
इण ही आंगण फिरगयो, धर्‌यो झोकियो नाम ॥

: ६ :

एक वाणियो बड़ै घरां वेटो व्यायर राजी हुयो। घर में बहू आई। बहू बडै घरां री बेटी। सारै दिन बैठी रैवै अर हुकम देवै। जद बाणियो बोल्यो—

गाडर आणी ऊन नैं, बैठी चरै कपास।
बहू ज आणी काम नैं, बैठी करै फरमास॥

: ७ :

एक गरूजी रै आपरी विद्या रो बळ हो। एक कागलै नै पींजरै में घाल कर सारी विद्या रटा दी। अन्त में कागलै नैं खोल्यो। कागलो उडर सीधो नरक में चांच देई। जद गरूजी बोल्या—

काग पढायो पींजरै, पढयो च्यारूं वेद।
समझायो समझ्यो नहीं, अन्त ढेढ को ढेढ॥

: ८ :

ठाकरां रै दो भाई आपरी कोटड़ी में बैठ्या हा। गैलै कांनी देख्यो तो बटावू चाल्या आवै हा। घर में घाटो हो। अब के करै? एक भाई अकल उपायर बोल्यो—

तूं उठा तरवारड़ी, मैं राखस्यूं टेक।
पावणां पावणां रै घरै जासी, आपां दोनूं एक॥

: ९ :

एक दिन काजी रै बळद नैं तेली रो बळद् मार्‌यो। काजी जी कचेड़ी में न्याव कर्‌यो—

लाल किताब उठ बोली यूं।
तेली बळद लड़ाया क्यूं॥
खुदा कै खळ कर दिया मुस्टंड।
बळद का बळद, पच्चीस रुपिया डंड॥

बिचारो तेली दूसरो बळद ल्यायो। अब काजी रो बळद तेली रै बळद नैं मार्‌यो। इण रो कचेड़ी में काजी न्याव कर्‌यो—

बळद का बळद पर, पड़ गया डाव।
इस का काजी, के करैगा न्याव॥

: १० :

एक बार दरबार में सारी रात नाच हुयो। नायका नाचती नाचती हारकर पखावची न बोली—

रात घड़ी भर रह गई, थाक्या पींजर आय।
नाट कवै पखावची, मधरा ताल बजाय॥

नायका री बात सुणर पखावची उत्तर दियोः—

घणी गई थोड़ी रही, थोड़ी भी अब जाय।
नाट कवै री नायका, ताल भंग क्यूं खाय॥

: ११ :

एक जाट रै गांव में काळ पड्यो। बिचारो जाट आपरी भैण रै घरां गयो, पण जीजो सार कोनी करी। दूसरी साल भैण रै गांव में काळ पड़्यो। भैण भाई घरां आई। भाई भोत सार करी। जद भैण बोली—

बखत पड़्यां रै बीर, तूं म्हानैं मोटा कर्‌या।
तिथ टूटै रै बीर, वार कदे टूटै नहीं॥

: १२ :

एक बणियाणी बोरगत करती। एक दिन एक जाट आकर पांच रिपिया दिया अर बोल्यो—"ये पांच रुपिया ब्याज रा अगावू ले अर एक महीनै खातर सौ रुपिया उधारा दे।" बणियाणी लोभ में आकर सो रूपिया दे दिया। जाट रूपिया लेकर चाल्यो अर चवन्नी काढर पाछो बोल्यो—"आ चवन्नी ब्याज री अगाबू ले अर पांच रुपिया एक महीनै खातर उधारा ओर दे दे। बणियाणी फेर लोभ कर्‌यो अर पांच रुपिया दे दिया। एक महीनो बीत्यो, बणियाणी जाट कनैं गई तो जाट बोल्यो—

सो नैं लेग्यो पंजो, पंजै नैं लेग्यो पाव।
अब के है सेठाणी, आव भलांई जाव॥

: १३ :

एक जाट रै गांव में काळ पड़्यो जाट आपरो परिवार सागै लेकर सासरै चल्यो गयो। सासरै रै गांव मांय जमानो चोखो हो। काम करायो अर रोटी खाई। अन्त में सीलै रै बखत साळा बोल्या, "जीजोजी, सीलै री सिट्टी थे तोड़कर थारो नाज लेल्यो।" जाट तो मान ली पण जाटणी स्याणी ही। आप रै धणी नैं बोली—

साजन, सिलो न खाइए, जे सोनै री बाळ।
बात रैवै दिन बीत ज्या, समै पलट ज्या काळ॥

: १४ :

संसार मांय सात सुख बताया है। ये सातूं सुख कोई जो विरळे भागी नैं ही मिलै है—

पहलो सुख, नीरोगी काया।
दूजो सुख, हो घर में माया॥
तीजो सुख, पतिबरता नारी।
चोथो सुख, पुत्र अधिकारी॥
पंचवो सुख, सुथांन बासो।
छठो सुख, नीर निवासो॥
सातवों सुख, राज में पासो॥

: १५ :

स्याणां लोग पांच सीख री बात बतावैं है। ये सदा सुरंगी सीख है—

बैठणो भायां को, चाहे बैर ही होवो।
जीमणो मा कै हाथ को, चाहे झैर ही होवो।
चालणो गेलै को, चाहे फेर ही होवो।
छायाँ मोकै की, चाहे कैर ही होवो।
धीणो भैंस को, चाहे सेर ही होवो।

: १६ :

एक सिंघ बिल्कुल बूढो होकर जोहड़ कन्नै आ पड्यो। अब चाल्यो जावै कोनी अर भूख लागै जद कनै आवै जिकै मींडका नै मारणा सरू कर दिया। धणी की या हालत देख कर सिंघणी बोली—

सिंघणी सिखवै सिंघ नैं, या ओछी मत धार।
इण हाथां हाथी हत्यो, अब मींडक मत मार॥

: १७ :

स्याणै लोगां की सीख मानकर कई चीजां से सैं दूर ही रहणों भलो है—

तिरिया सै तीस पैंड, सौ पैंड सांड सैं।
हाथी सैं हजार पैंड, लाख पैंड रांड सैं॥

तथा

गंडक सं दस हाथ, बीस हाथ सिंगाल सं।
तिरिया सैं तीस हाथ, सौ हाथ सूंडाल सें॥

: १८ :

बिरछ अर पान की बात सुणो—

पान झड़ंतो यूं कवै सुण तरवर बणराय।
अब का बिछड्या कद मिलां दूर पड़ांगा जाय॥
जद तरवर वां नैं कही, सुणो पात इक बात।
इण घर या ही रीत है, इक आवत इक जात॥

: १९ :

बिरछां की प्रतपाल सदा हो करणी चाहिजे—

आक न अहळो काटिए, नीम न घालो घाव।
रोहिड़े का काटणिया, तेरो दरगा में होसी न्याव॥

: २० :

अंग हीण आदमियां सैं सोच कर भिड़णो चाहे। ये घणा कुबधी होवै—

सो में सूर सैंस में काणो।
सब सैं ऊंचो ऐंचोताणो॥
ऐंचाताणै कर्‌यो बिचार।
मांजरियो सब को सिरदार॥

: २१ :

बत्तीस लखणां को कवित (छप्पय) सुणो—

सत्त सील गुण रूप, विद्या तप अलप अहारी ।
धन उदार जस तेज, चतर नायक उपगारी ॥
बुद्धवंत बळवंत, राज सनमान विचक्खण ।
भोग जोग गुर भगत, भाग पर बाण भुजाइण ॥
जस लाज धीर साहस धरण, दया ग्यांन उद्यम करण ।
रणसूर दान राजान को, बिरद बतीस लक्खण बरण ॥

: २२ :

॥ काळ का दिन तोड़ण एक आदमी आपकै सांसरै पूंच्यो ।
जुंवाई आयो देख कर सासू बोली—

आयो जुंवाइड़ो, धड़क्यो जी ।
कठै सैं ल्यावूं सक्कर, कठै सैं ल्यावूं घी ॥

जुंवाइ भूख मरै हो । पड़तो ही बोल्यो—

धायो तेती सक्कर, अर धायो तेरो घी ।
पोय दे मंडकियो, चाल्यो मेरो जी ॥

: २३ :

बिना अगन बळणै का रूप यूं बताया है—

देही का डंड, पुतर का सोग, नित उठ चलै बटावू लोग ।
अध बिचलै की मरज्या नार, बिना अगन ये बळज्या चार ॥

: २४ :

एक ठाकर आपकै बारठ नैं बेकार घोड़ो दान में दियो।
बारठजी घोड़ै नै देख कर बोल्या—

चढ़ियां तो चालै नहीं, खैंच्यां घालै फोड़ा।
पगां घालूं पाघड़ी, तूं चाल म्हारा घोड़ा॥

: २५ :

एक बारठजी ठाकरां की कोटड़ी मांय पूग्या अर क्युं मांग करी। मांग अहळी गई जद बारठजी रीसाय कर ठाकरां की कीरत करी—

देवी बाहण जाणकै आयो, आगै सीतला बाहण पायो।
सिव बाहण ज्यूं सभा विराजै, भैरूं बाहण ज्यूं घुर्रायो॥

(देवी बाहण = सिंघ। सीतळा बाहण = गधो। सिव बाहण = बळद। भैंरू बाहण = कुत्तो।)

: २६ :

एक बामण, एक साधु, एक चौधरी अर एक मीयों च्यारूं जणा मारग में सागै सागै जावैहा। एक जणों च्यारूं वां नैं एक सागै ही रामरमी करी—

पाये लांगूं पांडिया, आदेस बाबा जी।
राम राम चोधरी, सलाम मीयां जी॥

: २७ :

लाठी को जोर देखो—

च्यार लाठी चोधरी, पांच लाठी पंच।
दसेक लाठी घर में उठै, तो पंच गिणै न धंच॥

(२८)

राजा भोज रात नैं नगरी का हाल देखतो घूम र्यो हो। बो एक जगां देख्यो कै एक चोरंगो (दोनूं हाथ अर दोनूं पग कट्योड़ो आदमी) कुरड़ी पर पड़्यो है अर वै कै कन्नैं एक रूपवती युवती बैठी है। राजा युवती नैं बोल्यो :—

चन्द्र बदन म्रिग लोचनी, देह तेरी केसर जिसी।
मैं तनैं पूछूँ हे सखी, तनैं पड़ता ठोड किसी॥

इतरी सुण कर युवती बोली :—

राजा भोज चतर नर, वां बिन सभा किसी।
रण जूझत रजपूत नैं, पड़ता ठोड किसी॥

(२६)

एक जणो सेठाँ कनै जांचण गयो। सेठ क्यूं भी दियो कोनी, जद बो बोल्यो :—

म्हे तो आया भाव कर, प्रीत पुराणी जाण।
भाव तो आगै मर गया, कर चाल्या मूकाण॥

(३०)

सायर लोगां पिछाण की बात पक्की बताई है :—

पाँव पिछाणै मोचड़ी, नैण पिछाणै नेह।
पीव पिछाणै गोरड़ी, और मोर पिछाणै मेह॥

(३१)

एक लुगाई आपकै धणी नैं तमाखू छुटावण ताणी समझावणी देई :—

हाथ बळै हिरदो बळै, बळै बतीसूं दंत।
कर जोड़्यां कामण खड़ो, छोड़ तमाखू कंत॥

यो दूहो सुण कर वैं को धणी उत्तर दियो :—

तमाखू पीयां तामो कटै, पीवै हर का लाल।
मैड़्यां बैठ्या मजलस करै, कुढ कुढ मरै कंगाल॥

(३२)

तमाखू की महिमा सुणो :—

च्यार चोधरी मतो उपायो, गंगा न्हावण खातर।
आधी टै सं औटा आया, रांड तमाखू खातर॥
चिलम चतरभुज, नैं नारायण, हुक्को हर की काया।
भरी डब्बी में हाथ दियो, जाणै गंगा जी न्हाया॥

(३३)

एक अमली की लुगाई आपकै धणी से तंग आकर वोली :—

नाक झरै, नखसर झरै, आंख्यां गीड़ अपार।
गोरी पूछै सायबा, थे कद मरस्यो भरतार॥

इतरी सुण कर अमली पड़ूत्तर दियो :—

आज मस्या, काल मस्या, मस्या मस्या फिरां।
घाल कचोलै दळमळै, जद बनड़ा होया फिरां॥

(३४)

दो जणा बैठ्या बतळावै हा। एक जणो बोल्यो :—

आळस नींद किसान नैं खोवै,
चोर नै खोवै खाँसी।

टक्को ब्याज मूळ नैं खोवै,
तिरिया नैं खोवै हांसी ॥

इतणी बात सुण कर दूसरो आगै बोल्यो—

राम नाम मुजरै नैं खोयो, छिड़को खोयो चोकै नैं ।
पगड़ी तो नुक्कै नैं खोयी, सुलफी खोयी होकै न ॥

(३५)

एक जणो बोल्यो :—

खेती-पाती बीनती, पणमेसर को जाप ।
पर हाथां ना कीजिए, करिये आपो आप ॥

दूसरो साथी बात नैं आगे बढ़ाई :—

राम राम लियां कूवो चालै,
गाडो चोलै मसकरियां ।
खेती तो जद बणै सांथरी,
जद मँडै लँगोटो कसकरियां ॥

(३६)

एक विणजारो रोही माय बाळद ढाली अर बिसराम कर्‌यो । बठै एक सिल पर ये बोल मँडर्‌या हा :—

उत्तम खेती, मद्धम बाण ।
अधम चाकरी भीख निदाण ॥

बिणजारो ये अंछर बांच कर बिचार कर्‌यो, तेरी विणज तो मद्धम है । उत्तम तो खेती है । यो बिचार करकै उठै खेत बुहा दियो अर पछै बाळद लादकर चल्यो गयो । साल भर बाद आयो

तो उठै क्यूं भी कोनी लाध्यो। बिणजारै नै झाळ आई अर सिल नै उठा कर पटकी। सिल कै दूसरी कानी या बात मँडरी :—

खेती, धणियां सेती।

(३७)

एक लुगाई आपकी पाड़्योसण की देखा देखी होळी नैं खूब पकवान कर्‌यो। पछै पाड़्योसण की पोळी जिसी आपकै घर की पोळी करवाई। थोड़ै दिनां बाद पाड़्योसण क बेटो होयो, जद वैं को धणी बोल्यो :—

होड़ां होळी, होडां पोळी।
होडां बेटो, जण ए भोळी॥

(३८)

एक सेठ नांवजादीक कंजूस हो। वो बूडो होकर बीमार पड़्यो अर मरण घड़ी आई जद चिमक कर उछल्यो। सेठाणी कन्नै ही खड़ी ही। वा आपकै धणी नैं बोली—थे चिमक कर उछल्या कैयां ? सेठ उत्तर दियो, मन्नैं जम को दूत दिखाई दियो जद भारी डर लाग्यो। या बात सुण कर सेठाणी बोली :—

भाई जाण्यो ना भेळपो, सगो जाण्योना मिंत।
कर जोड़्या कामण कवै, जम क्यूं जाण्यो कंत॥

आपकी लुगाई का बोल सुण कर सेठ समझावणी देई :—

हाथां दियो न हर भज्यो, कर्‌यो न पर उपगार।
बोझां मरती बापड़ी, धरती दियो बतार॥

(३६)

दातार अर मंगतै को भेद देखो—

दातार दियो मंगतै नै, मंगतो गयो खाय।
मंगतो दियो दातार नै, जातां जुगां न जाय॥

(४०)

राजस्थानी कवि खटमल की बीरता भी बखाणी है :—

राणा थारै राज में, खटमल बडो सिपाई।
दिन में बांधै मोरचा, अर रात्यूं करै लड़ाई॥

(४१)

भेख देखकर जात पिछाणी जावै। लुगायां की बात सुणो—

राम - राम ए बाण्यां की।
तूँ क्यूं जाण्यो बाण्यां की?
घेर घुमेरी पैरे घाघरो, हाथां मँहदी लछाणी।
सटपट २ जूती बाजै, जद जाण्यो मैं वणियाणी॥
राम राम ए नाप्यां की।
तू क्यूं जाण्यो नाप्यां की?
लुमुक भूमूक पैरो घाघरो, बात करै चतरायां की।
लाडू चोर बगल में दाब्यो, जद जाण्यो मैं नाया की॥
राम राम ए जाटां की।
तू क्यूं जाण्यो जाटां की?
चरड़ मचड़ तेरी बाजै मोचड़ी,
सिर पर हांडी खाटां की।

झमकै चाल चोगटै चालै,
जद जाण्यो मैं जांटा की ॥
राम राम ए तेल्यां की।
तू क्यूं जाण्यों तेल्यां की ?
आडा टेडा लक्कड़ चालै बात करै अलबेल्यां की।
चोपड़ चोपड़ देही राखै जद जाण्यो मैं तेल्यां की ॥
राम राम ए राणां की,
तू क्यूं जाण्यो राणां की ?
हाथ डफड़िहो काख गुदड़ियो,
सिर पर गँठड़ी दाणां, की।
घर घर नाज मांगती डोलै,
जद जाण्यो मैं राणां की ॥

(४२)

एक जणो भोलो हो। एक बार वैं की लुगाई बोली—

तीन कूंट तीखी अणी, सूवै पांख जिसा।
अरज करूँ रै बालमा, म्हानैं ल्यावो इसा ॥

आप बाजार में आकर बोली को अरथ पूछयो अर पान लेकर घरां आयो। पण पान तो घास-फूस है अर गायां को खाज है या सोच कर बळद की ल्हास मे धर दियो। बळद झट खागो। जद लुगाई फेर बोली—

मूरख नै चात्रग मिल्यो, कुण समझायो कंत।
ल्याय ल्हकोयो ल्हास में, बळद रचाया दंत ॥

एक पंडत आपकी लुगाई नैं बोल्यो, "मैं पगात परै जावूं हूँ।" लुगाई उत्तर दियो, "जे पगात परै जावोगा, ता बळद कुहा कर आवोगा।" पंडत आपकी बात पर अड़कर चाल्यो अर पगातपरै पूंच्यो जद पंडत नैं तीस लागी वो कुवै पर गयो। एक छोरी पाणी लेवण नैं आई। पंडत छोरी नैं पाणी प्यावता की कही पण पहली वै की जात पूछी। जद छोरी बोली—

रज्ज में सैं रज्ज काडै, रज्ज मांही ममता।
उण घरां की डीकरी मैं, पी पाणी पंडता॥

पंडत जाणगो वा सुनारां की छोरी है। सो वै को पाणी कोनी पीयो। पछै दूसरी छोरी आई जद भी पंडत जात पूछी। वा बोली—

स्यार में सैं स्यार काडै, करै खण्ड भंडता।
उण घरां की डीकरी मैं, पी पाणी पंडता॥

पंडत जाणगो या दर्जियाँ की छोरी है। सो वै को पाणी कोनी पीयो। पछै तीसरी छोरी आई, जद भी पंडत जात पूछी। छोरी बोली—

गरण गरण घट्टा बाजै, मांय जगमगता।
उण घरां की डीकरी मैं, पी पाणी पंडता॥

पंडत जाणगो, या लुहारां की छोरी है। सो वै को पाणी कोनी पीयो। पछै चौथी छोरी आई, जद वै नैं भी पंडत जात पूछी। छोरी यों बोली—

धरती ऊपर रत्थ चालै, रत्थ ऊपर रैणका।
उण घरां की डीकरी मैं, पी पाणी पंडता॥

पंडत जाणगो, या कुम्हारां की छोरी है, सो पाणी कोनी पीयो। पछै कोई कूवै पर कोनी आयो। पंडत नैं तीस ओर भी जोर की लागी। वो मन में विचार कर्‌यो, धरती पर पड्यो पाणी पवित्र मान्यो गयो है। उठै थोड़ो सो पाणी धरती पर भेळो होय र्‌यो हो। पंडत बैठकर वो पाणी मुंह सैं पीवण लाग्यो। इतरै में ही वै च्यारूँ छोरियां आ निकली अर पंडत नैं पाणी पीवतां देख्यो जद च्यारूँ एक सागै बोली—"अर, यो तो बळद है।" इतरी सुण कर पंडत पाछो आपके गांव नैं ही आयगो।

(४४)

सुनारां की पारसी (बोली) न्यारी ई है। एक बर एक सुनार अर एक बामण कमा कर दिसावर सं आपकै गांव आवै हा। मारग में नदी आई। दोनूं जणां नदी पार करण लाग्या। सुनार पाणी में बह चाल्यो। जद वो आप को गांठड़ी बामण नै देकर एक दूहो आप कै घरका ने सुनावण नैं पुकार कर कह्यो :—

केयी तो नंदी बियो, सीयो कूँसड़ हत्थ।
हूंठणो ह्वे तो हूंठजे, नीतर लीजै जूणग्या पत्त॥

बामण गांव में आकर सुनार की गांठड़ी तो दाबली अर यो दूहो वैं कै घरकां ने सुणा दियो। सुनार कं घरका सारी बात समझ्या। (केयो=सुनार। सीयो=सोनो। कूंसड़=बामण। हूंठणो=

लेणो। जूणग्या=जूता) वै राज में पुकारयां अर बामण कनै सैं आप को धन पाछो ले लियो।

(४५)

एक खत्राणी कै बटावू आयो। खत्राणी बोली, अणदेखी अर अण सुणी बात कह्यां रोटी घालूं। जद बटावू या बात कह कर रोटी खाई :—

कुत्तो बैठ्यो हाट क तोलै ताखड़ी।
आकां लाग्या आम फिरासां काकड़ी॥
कीड़ी करै सिणगार क हाथी परण नैं।
ऊँट फिरै बीचाळ सलाह करण नैं॥
पाणी लागी लाय बुझावै तुण तुणी।
सुण खत्राणी बात अण देखी अणसुणी॥

(४६)

कोटड़ै कै सैयदजी को ब्याह आध आनै में होयो। ब्याह को हिसाब सुणो —

दमड़ी का सेहरा सजाया सीस दुलहा के,
दमड़ी की हुलक उडाई आसमान में।
दमड़ी की रोसनी लगाई ब्यारू कूंटन में,
दमड़ी की नौबत घुराई खासखाने में।
धेले के वणाये हैं पांचू पकवान ओर,
पैसा एक खरच्या है नेगी नफराने में।

खरची की तंगी थी पण मदद खुदा ने रखी,
सैयद की सादी हुई आज आध आने में।

(४७)

एक लुगाई न्हावै ही। बगतो बटावू मारग पूछयो—
जल पैरण जोबन ढकण, ऊपर केसन की छाया।
म्हे पूछां सुन्दरी म्हानैं, मारग बता करकै ऊँची बांयां॥
लुगाई इण तराँ मारग बतायो—
हरीया-हरीया रूंख देखो जै, सीतळ उण री छाया।
म्हे मारग ना बतावां मानवी, दूखै म्हारी बांयां॥

(४८)

एक कवि आपकी लुगाई नैं 'उपमा' को रूप पलट कर यूं हेलो मार्‌यो।

गजनैणी अर खर मुखी, जो लंकी रंग ताव।
लाजाळू कविराय की, ऊँट पगी घर आव॥

(४९)

जाटां कै बेटी को ब्याह हो। चौधरी पंडत नैं घणो सारो घी होम कै तांई दियो। पंडत एक लोटै नैं चुपचाप घी को भर लियो अर बळदां की ल्हास में जाकर ल्हको दियो। पछै फेरा करावण लाग्यो। नेवगण पंडत नै घी चोरतां देख लियो हो। मोको देख कर वा नयो गीत गायो—

"बनड़ी थारै ए बावल को घिरत ज पांडे चोरियो"
पंडत यो नयो गीत सुण कर नयो साखोचार बोल्यो—

कड़ कड़ मत कर कड़कसा, मत कर फांटमफांट।
घिरत पड़यो है ल्हास में तनैं देस्यूं आधो बांट ॥

ये बोल सुण कर नेवगण चुप होई और कोई भेद कोनी जाण पायो :

(५०)

एक आदमी सवाल कर्यो—

पाणी दूर गागर सिर भारी।
ठिमक चाल चालै पणिहारी ॥
मेघ नहीं कोई मेघाडम्बर।
किस कारण धण जोवै अम्बर ॥

दूसरो आदमी उत्तर दियो—

दूर देस सैं साजन आया। कुटम मिला हम मिलण न पाया ॥
कद कासिब सुत किरण ल्हकोवै। इस कारण धण अम्बर जोवै ॥

(५१)

लुगाई के सोल्हा लखणां को दूहो सुणो—

च्यार चतर पद च्यार खग, च्यार फूल फळ च्यार।
गोरी इंदा गात में, ये सोळा सिणगार ॥

(विगत)

च्यार चतर पद—१ हाथी की चाल, २ मिरग सा नैण, ३ सिंघ की सी कटि अर ४, घोड़ी सी चंचल।

च्यार खग—१ कोयल सी वाणी, २ सूवै सी नासिका, ३ भँवरा सा भुंवारा अर ४ मोमोळा (बीर बहूटी) सी सलतार।

च्यार फूल—१ कवळ बदनी, २ चंपा को रंग, ३ चंबेली सी सुगन्ध, ४ गुलाब सी कांति।

च्यार फळ—१ नींबू सा कुच, २ सुपारी सी सुंडी, ३ बिम्बा फळ सा होठ अर ४ अनार कुळी सा दांत।

(५२)

एक लुगाई कनै पांच-सात सै रिपिया हा। वा एक बाबाजी नै पूछ्यो कै मैं रिपिया को के करूँ ? बाबाजी बोल्या "कै सीरो पुरी कर कै खाया कर।" थोडै दिनां पछै दोय तीन सै रिपिया रह्या जद फेर बाबाजी नैं वाही बात पूछी। बावाजी कह्यो "अब लापसी खाया कर।" थोडै दिना बाद रिपिया पचासेक बंच्या जद ओजूं बाबाजी की सलाह लेई। बाबाजी बोल्या, "अब छप्पर छवा दे।" रिपिया पूरा होया जद वा लुगाई बोली—

पहली खाया सीरा पूरी, पछै खाई लापसी।
बचे खुचे का छप्पर छवाया, आखर मोडो कर दी आपसी॥

(५३)

एक लुगाई आपकी पाड़योसण कै घरां जाकर बोली—

बिन डांडी फळ नीपजैं, बिन पत्तां फळ होम।
मैं तेरैं आई हे सखी, म्हारै है नहिं सोय॥

पाड़योसण समझी कोनी। जद सासू बोली—

पाड़योसण चातर घणी, तू बहुअड़ अणजाण।
छत्तीसां को सायबो, वैं नैं ल्यावो पिछाण॥

फेर भी समझ कोनी पड़ी। जद सासू समझा कर बोली, लूंण मांगण आई है। लूण दे दे।

(५४)

एक जाट मोडै नैं मांगतो देखकर सोच्यों, यो तो मौज करै है। आपां भी कोई सांग धारण करां। मोडै कै गळ में सेलीसिंगी ही। आप के गळै में खाट को एक पागो घाल लियो अर एक लाठी कै आगे हांडी बांध ली। अब मोडै कै सागै हो लियो। जिकै घर में मोडो बड़ै, आप सागै बड़ै अर लाठी आगे करकै बोलै—

नो नाथां में नाथ कुहावां, खट दरसण में आगा।
ऐं कै गळ में सेलीसिंगी, तो म्हारै गळ में पागा।।

(५५)

एक लुगाई भाख फाटे बिना ही उठ कर चाकी पीसण की त्यारी करी अर नाज लेवण नै आपकी सासू नैं आकर बोली—

मंजारी भख को भखण, सो भख तुमरै पास।
परवत-सुत सैं जुध करूँ, खोल कुवाड़ी सास।।

सासू आपकी बहू नैं उत्तर दियो

लटकै लटी लिलाड़ पैं, तूं अबला की जात।
अपणै पिव नैं छोड़ के क्यूं आई आधीरात।।

बहू तो मुरगै की बोली सुणकर भाख फाटी समझली ही आप की सासू नैं समझा कर बोली—

भोम डसण रिपु बोलियो, तो सुत फेरी पूठ।
सिव - तिलक सारँग भयो, जद आई मैं ऊठ।।

इतरी बात सुण कर सासू जवाब दियो—

आठैं चन्द उजासियो, मुरगो है मत हीण।
जावो अपणै पीव पै, सुख भर सोवो नींद॥

सासू आपकी बहू नैं पाछी भेज दी जद बहू मुरगै नैं आकर ओळमो दियो—

तुरकट तेरे बचन पर, पिव तजि दीनी मोय।
सिव सुत बाहण ता रिपु, वेग मिळावूं तोय॥

बिल्ली को डर दिखायो जद मुरगो उत्तर दियो—

मंजारी सुत वोलियो, भणक पणी मो कान।
इण डर बोल्यो हे सखी, तूं निश्चय कर मान॥

(५६)

एक बार जाट जाटणी कोई कारण सैं रूस कर बैठ्यगा अर अर आपस में बतळावै कोनी। पण ऐंयां काम कैयां चालै। दोनूं आखता होयगा। जद जाटणी कोई मिस लेकर बोली—

लोग-बाग खेत जावै, लोग घरां क्यूं ? यो बोल सुण कर जाट पड़ूत्तर दियो—

लोग-बाग जीम्या जूठ्या, लोग भूखा क्यूं ?

जाटणी फेर बोली —

छीकै ऊपर रोटी पड़ी, खाय ले नी क्यूं ?

पछै जाट राजी होकर बोल्यो—

अब तो आपां बोलण लाग्या, घाल दे नी क्यूं ? जाटणी रोटी घाल दी अर जाट खाकर खेत चल्यो गयो।

एक सेठ जीमै हो। सेठाणी आपकै हाथां कै मँहदी मँडा राखी ही अर सुकावै ही। सेठ जीमतो-जीमतो पाणी मांग्यो पण सेठाणी मँहदी को नाम लेकर नटगी। सेठ नैं भोत झाळ आई, या लुगाई तो धणी सैं मँहदी नैं घणी प्यारी मानै है। थोड़े दिनां बाद सेठ दूसरो ब्याह करकै नई सेठाणी ओर ले आयो। एक दिन फेर सेठ जीमै हो अर पहली सेठाणो मँहदी मँडायां बैठी ही। सेठ पाणी मांग्यो अर बा वेगी सी मँहदी धोकर पाणो को लोटो ल्याई। जद सेठ बोल्यो—

गहली पहली समझी नहीं, मँहदी का रंग लाल भया।
अब तू समझी प्राण पियारी, वै पाणी मुलतान गया॥

(५८)

एक जंवाई मुकलावो करण नैं सासरै गयो। सालियाँ भेळी होकर आई अर जीजै की चतराई देखण नैं एक जणी बोली—

मोती वरणा ऊजळा, हाथ लग्यां कुमलाय।
ना माली कै नीप जै, ना राजा कै जाय॥

जुंवाई ई·प्हाळी को अरथ (ओळो) समझग्यो पण चतुराई सैं उत्तर दियो—

हाट ना बाजार ना, बाण्ये की दुकान ना।
आबाद्यो चैत, अर जाबाद्यो होळी।
थे मांगो दो च्यार, म्हे भर देस्यां झोळी॥

(५९)

भगवान कैं भगतां की मंडली जुड़ी ही अर लीलापद गाया

जावै हा। मंडली में एक निरगुणी साध आयो। भगतां साध नैं भी कोई चीज सुणावण की कही। जद आपस में वार्ता हुई—

(भगत)	(साध)
गा, म्हाराज, गा।	गाय कोनी गोधो है।
बोल, म्हाराज, बोल।	बारा रिपिया मोल।
यो तो मोडो मसकरो।	दो छोड्या, दस करो।
बड़ो मजै को साध।	नौ सैं कम ना आध।
फक्कड़ गप्पी निराठ।	नगदी लेस्यूं आठ।
साध बड़ो निराळो।	हाजर सात निकालो।
साध कै है खेलो।	छै सैं कम नहिं धेलो।
करो मोड़ै नैं दूर।	लेस्यूं पांच जरूर।
काडो मोडै नैं बार।	रिपिया द्‌यो च्यार।
खोस ल्यो सारी साज।	तीन लेतां तो लाज।
ना गायां, द्यो धक्का।	ना चाहे दो टक्का।
छोड़ो, भगवा भेख।	काठो राखो एक।
ग्यानी दीखै, गुणो।	सुन को गावणो सूणो।

(६०)

मरुभोम में पानी भी न्यारा-न्यारा है :—

पीवण पाणी ओर है, न्हावण पाणी ओर।
धन धावण नैं ओर है, धन रै नन्दकिशोर॥

व्यंग्य-विनोद

एक सेठ तीरथ करण नैं गयो। अर सिनान संपाड़ो कर कै बामण जिमावण री त्यारी करी। तीरथ पर एक बामण नैं कह दियो कै पाँच-सात बामणों नैं सागै लेयर जीमण आज्यावै। एक जाट आ बात सुण ली। थोड़ी देर पछै जोर री आंधी आई। जाट खुद बामण रो भेख कर्‌यो और इणी भेख में पांच-सात जाट सागै लेयर आ पूग्यो। सेठ वां नैं बामण समझकर सम्मान सैं जिमाया अर दिछणा देयर विदा कर्‌या। थोड़ी देर पछै नूंत्योड़ो बामण आपरा साथी लेयर पूग्यो। सेठ चकरायों। बात परगट हुई अब सेठ बोल्यो—

आंधी आई मिलग्या पाट, नूंत्या बामण जीमगा जाट।
आ रै म्हारा सम्पटपाट मैं तनैं चाटूं तूं मनैं चाट॥

(२)

सराधां रा दिन हा। एक फकीरां रो छोरो देखी कै बाम्हणां रै तो मोज हो रैयी है। एकर तो आपां भी सराध जीमां। छोरो बाम्हण रो भेख कर लियो अर गांव में फिरै। एक लुगाई नूंतो दे

४

दियो। अर छोरै ने घरे ले जायर आसण पर बिठा दियो। आप रसोई में जायर बोली, "म्हाराजजी, होते कढाय दो।" अब छोरो के करै ? हांते के हो ? वो सोचकर बोल्यो —

दोय तीन तो टिक्कड़ धर दे, ऊपर धर दे खीर।
तेरा मुरदा भिस्त जायगा, स्हाय करैगा पीर॥

नयो सिंलोक सुणर लुगाई चकराई, ओ तो बामण कोनी। लाठी उठाई तो छोरो भागो।

(३)

ठाकर परस में बैठ्या हा। ओर लोग भी बैठ्या हा। ठाकरां रै कंवर जलम्यो। घर में एकदम घाटो। बांदी परस में आयर ठुकराणी रो सन्देसो सुणायो—

परस पियाजी घर चलो, घर आया मिजमान।
सरबत दीन्यो घोळकर दो दीन्या हलवान॥

ठाकर समझ्या कोनी। बांदी फेर बोली—

हलवानां हड्डी नहीं, मिजमानां नहीं दन्त।
इण रो अरथ विचार कर, घरे पधारो कन्त॥

(४)

एक डूमणी जजमानां रै ब्याह में गई। आपरो भाखलो गोखै पर धर कर घर में जा बैठी। कीं हाथ पड़्यो कोनी। पाछी वारणै आयर देखै तो कोई उचक्को भाखलो भी उठायर चालतो बण्यो। डूमणी बोली—

आई ही कीं ओर नैं, होय गई कीं ओर।
बखल गमायो गांठ रो, देख चली टमकोर॥

(५)

दोय डूमणी मेळै जावै ही। एक डूमणी थूक दियो। दूसरी बोली—"ओ के कर्‌यो? बिना ताल ही थूक दियो?" पहली बोली, "थूकणो ताल मैं कैयां होवै?" दूसरी ताल में थूक कर बतायो—

अचक पचक धिना नागड़्दी नागड़्दी धिना, थूह।

(६)

एक ठाकर कमेड़ी मार कर बीर बणगो। पछै एक तीस्यो गादड़ो मार लियो। अब हिम्मत बधी। एक दिन नाहर रा खोज देख लिया अर सिकार करण नैं खोजां-खोजां चाल्यो। एक जणो सारी बात जाणै हो, बो टोक कर बोल्यो—

दाणां चुगती मोडी मारी, गादड़ मार्‌यो प्यासो।
अबकै खोज बड़ा का लीन्या, जड़ामूळ सैं जास्यो॥

(७)

एक जाट अर मियों गैलै जावै हा। मियों बोल्यो, हिन्दू जात खराब है। आदमी नैं मर्‌यां पछै जला देवै। म्हे बाळां कोनी, जमीं मांय धर देवां, जिको रात नै फरिस्तो आवै अर बात करै। जाट पड़ूत्तर दियो—

बोली बोली को आंतरो, बोली बोली को फरक।
थारै कैवै फरिस्तो, अर म्हारै कैवै जरख॥

(८)

सियाळो भोत जोर पर हो। दो डूम गोडां में सिर दियां रात काटै हा। थोड़ी देर पछै सीळी पून चाली, जद डूम धूज उठ्या एक डूम बोल्यो—

डूंगर पर सै दावो उतर्‌यो, पैर बनाती जूता।
पून पापणी यूं उठ बोली, अै कूणै में सूता॥

(९)

एक डूम सारी रात गोडां में सिर देकर सी-मरतो बिता दी। दिन उगतां ही तावड़ै में आयर बैठ्यो अर जाडै नैं बोल्यो—

च्यार ओढूं, च्यार बिछावूं धूणी बाळूं ताजा।
इसो मरद रो बच्चो है तो, दोफारी में आज्या॥

(१०)

एक डूम दूसरै गांव गयो। सियाळै रा दिन हा। रात पड़ी तो एक कूवै कनैं बैठगो। चांद उग्यो। डूम चांद नैं देखर बोल्यो, "वो ऊग्यो सूर रो भाई भूर! अब सी नेड़ै ई को आवे नीं।" आप री सोड़ ओढर डूम खेळ में बड़गो। थोड़ी रात गयां एक चोर आयो अर डूम री सोड़ अर सारंगी लेयर भाजगो। डूम सारी रात सी मर्‌यो। दिन उगे सूरज नैं देखर डूम बोल्यो—

उग रै म्हारा सूरज भाया,
थां ऊग्यां, ऊबरसी काया।
रात नैं ऊग्यो हो एक लपोड़,
दिवा दी म्हारी सारंगी-सोड़॥

(११)

एक आदमी एकदम गरीब हो। दिनां रै फेर सैं बो भागवान होयगो। एकर एक जान में गयो। मांडै ह्राळा सीरो कर्‌यो। बो जीमण बैठ्यो जद बोल्यो, "सीरो तो म्हारै गरमी करै।" एक मांडेती पुराणो जाणकार हो। बो बोल छुट्यो—

चावळ मिलता ल्हास में, होळी दिवाळी तेल।
अब सीरो गरमो करै, देख दई का खेल॥

(१२)

जाट अर मियो पाड़्‌योसी हा। एक बार काजीजी रुसगा अर मिंये रै घरां फातिहा दिवावण कोनी आया। जाट बोल्यो—"के बात है, फातिहा मैं दिवा देस्यूं। जाट फातिहा रा कुंडा कर बोल्यो—

तनैं फातिहा, मनैं फातिहा,
फातिहा पड़ी पुकारै।
ल्होड़ियो कूंडो तूं ले ले,
अर बडोड़ो धरया म्हारै॥

(१३)

एक डूम री घोडी लोगां रा खेत चरती लोग डूम पर दया करता अर घोड़ी नै बांधता कोनो। एक दिन घोड़ी ठाकरां रै खेत में बड़गी। ठाकर घोड़ी नै बांधर बद-रूप कर दी। घोड़ी घरां आई, जद डूम देखर बोल्यो—

पूंछ कतरी, आल कतरी, कतर्‌या बाळ कपाळ रा।
घोड़ी खेत घणां रा खाया, पण गुरू मिल्या गोपाळ रा।।

(१४)

एक बारठ रै घर मैं घाटो हो। मोठां री रोटी खातां-खातां एक दिन मन में विचार कर्‌यो, कै ठाकरां रै चालर घी-गीहूँ तो खाकर आवां। बारठ चाल पड़्‌यो अर ठाकरां रै पुंच्यो। ठाकर विचार्‌यो, आप रै घरांही बारठजी गींहू री रोटी खाता हुसी। अठै रा मोठ नांवजादीक है। बारठजी नैं मोठां री रोटी करायर नईं चीज खुवावां। बारठजी तांई थाळ आयो, जद रोटी मोठां री! बारठजी माथै रै हाथ लगायर बोल्या—

कीं करणी, कीं करमगत, कीं भावी रा खोट।
गीहूँ नैं उमग्यो फिरयो, लिख्या करम में मोठ।।

(१५)

एक ठाकरां रै बारठजी मेहमान हुया। बारठजी नै डेरो दिवायो। पण जद भी बारठजी ठाकरां सूं मिल्या तो वां नैं पाणी खातर ही पूछ्‌यो अर जीमण री चर्चा ही कोनी चाली तो आखर कविवर ठाकरां नैं यां दूहो सुणायो—

पाणी पिवो परभात, दोफारां पाणी पिवो।
ब्याळू री नहीं बात, संझ्या ही पाणी पिवो।।

(१६)

एक बारठजी रै घर में भारो तंगी ही। एकर वै ठांकरां री कोटड़ी आया। भूख जोर सूं लागरी ही। ठाकर कोटड़ी में हा

कोनी। ठुकराणी बारठजी तांणी पतळी-पतळी रोटी पोई अर जीमण नैं बिठाया। आप ठुकराणी ऊपर झरोखै में बैठगी, बारठजी सूं बडाई सुणस्यूं। बारठजी भूख मरै हा। पतळी रोटी रा कई टुकड़ा तोड़ै जद सांस आवै। बारठजी नैं झाळ आई। बै ठुकराणी री या बडाई करी—

पतळा - पतळा फलका पोया,
दे दे तूंको पाणी रो।
बैठ झरोखै झांकण लागी,
बाळू मूंह ठुकराणी रो॥

(१७)

बारठजी ठाकरां री कोटड़ी आया। सनमान पायो। भांत-भांत री कविता सुणाई। ठाकर बोल्या, "कोई म्हारी भी सुणावो।" बारठजी बोल्या, "थारो कोई वीरता रो काम बताओ तो थारी भी सुणाद्यां।" ठाकर बोल्या, "एक दिन म्हे सुपनै में तलवार म्यान सूं काढी पण क्यां रै मारी जिकी याद कोनी। बारठजी कविता सुणाई।

सुपनैं मैं सेखै के पोतै, झट्ट म्यांन सैं लीनी।
आखड़तै पड़तै ळळबळिए, क्यां कै तो दीनी॥

(१८)

एक बारठ रै घर में घाटो हो। नाज निमड़तो देखर कोथळी में चून घाल्यो अर दूसरै गांव खातर बहीर हुयो। आगै एक गांव

में ठाकरां री कोटड़ी पूग्यो। ठाकरां रै घर में भी रोटियां रा ही सांसांहा। आखर बारठ आप री चून री कोथळी देई अर रोटी करवाई। ठाकरां री बाई रोटी करती वेळा थोड़ो सो चून आप खातर ल्हको लियो। बारठ ठाकरां री बेटी नैं चून चोरतां देखली पण चुप रैया। अन्त में चळू कर कै आपरी कोथळी हाथ में लेई अर बोल्या—

कोथळ क्यूं तू ऊणमणो, क्यूं तेरो ढोलो गात।
केतनैं कुत्ता फंफेड़ियो, के लाग्या बाई जो रा हाथ॥

(१६)

एक गांव में बावाजी आया। लोग चोखो आदर दियो। खेतां रा सिट्टा पाक्योड़ा हा। बाबोजी रात पड़्यां नीसरता अर गांव रै बारै कोई गधो पकड़ लेता। पछै गधै पर चढ्या चढ्या खेतां रा सिट्टा तोड़ ल्याता। खोज देखर खेत रो धणी सोचतो गधेड़ो आयर रात नैं नुकसान करै है। एक रात जागकर खेत में निगै राखी अर बाबाजी रा ढंग देखर बोल्यो—

गटमण गटमण माळा फेरै, अे तो काम सिधां का।
ऊपर सूं बावोजी दीखे, नीचै खोज गधां का॥

(२०)

एक जाट आप रै घर में नया ठांव कराया। आंगणै में एक कीकर खड्यो हो। जाट विचार कर्यो, "ओ कीकर कटायर ठांवां रै किंवाड़ करवा लेवां।" पण वें कीकर नैं गांव रा लोग खेतरपाळ थरप राख्यो हो। जाटणी नटगी, खेतरपाळ रो कीकर कोनी

कटावां। जाट अकल उपाई अर दिन उगतां ही उठर जाटणी नैं बोल्यो—

आज रात नैं खेतरपाळ आपणै घर रो कीकर छोड़ दियो अर फळसै रै वारणै कैर में चल्या गया है। जाटणी ई वात रो खुलासो पूछ्यो तो जाट बोल्यो, "रात खेतरपाळ कीकर में सूं परगट होयर मनै दरसण दिया जद मैं अरज करी—

खेतरपाळ बलिहारी थारै, थोड़ो सो कारज अड़्यो म्हारै।
कीकर छोडर कैर पधारो, इतरो कारज सारो म्हारो॥

अर खेतरपाळ मेरी अरज मान लीनी। जाटणी राजी हुयगी अर जाट कीकर कटायर किंवाड़ करवा लिया।

(२१)

सूमण आप रै धणी सूम नै उदास देखर बोली—

सूमण पूछ सूम नैं, किण विध मुक्ख मलीन।
के गांठी सैं गिर पड़्यो, के काहू नैं दीन॥

सूम जवाब दियो—

नां गांठी सैं गिर पड़्यो, ना काहू नैं दीन।
देतां देख्या ओर नैं, इण विध मुक्ख मलीन॥

(२२)

एक बूढो जाट मोटी सी पोथी देखर बोल्यो—

कक्कै रा छत्तीस आंक, वैही सारो जगां।
बडा बडा पोथा लिख्या, म्हारै मटै ठगां॥

(२३)

एक जणै रो नांव सुक्खो हो। बो दिन उगे उठतो, अर हुको त्यार करतो। एक जणो नेम सैं आकर हुक्को पीवण लागो। सुक्खो सोची, "नित री नित ओ मुलायजो कैयां सधै? ओ चिलमचट्टू तो फटकार खायर मानसी।" एक दिन दोनूवां रा ये सवाल जवाब हुया—

क्यूं ताऊ सुक्खा अठै नहीं है हुक्का।
अै टाबर आपरा नहीं के तेरै बाप रा॥
जुग जुग जीवो मरो चाहे जीवो।
अब भरो अर पीवो।

(२४)

बिलासी गांव बारठजी नैं सासण में मिल्योड़ो हो। पण बठै खारो पाणी हो, इं कारण गांव बढोतरी कोनी कर पायो। इसी हालत में एक जणो बारठजी नैं बोल्यो कै आप छापर, जिन्दासर जिसा गांव न लेयर या खारै पाणी री बिलासी सासण में क्यूं लेई? जद बारठजी आप रै गांव री महिमा इण भांत गाई—

छापरड़ी दोय टापरड़ी, जिन्दाणै घर च्यार।
ऊँचे मगरै बीलपुर, म्हारो सांभर रै हुणियार॥

(२५)

एक बारठजी रै घर में घाटो हो। मोजरा दिन देखण खातर जजमानां रै आगरै पूंच्या। बो देस री चीज सोचर बारठजी

खातर राबड़ी त्यार कराई गई। जीमण रो थाळ आयो, जद बारठजी बोल्या –

राब तिहारो रोस, बैरण कदे न बीसरूं।
छोडी तो सौ कोस, आण पहूँची आगरै॥

(२६)

एक डूम अर डूमणी आपस में झगड़ो करकै बोलणो बन्द कर दियो। पण लोग-लुगाई रो बोले बिना निभाव किण भांत हुवै। एक रात डूम री मनस्या हुक्को पीवण री होई। कोठै में अंधेरो अर दीवै रो जोगाड़ कोनी। डूम कोठै में वड़्यो तो आखड़ कर पड़्गो। पछै बारणै आयर बोल्यो—

बोलां नहीं, चालां नहीं, घर में आंधा-घुप्प।
पड़कर गोडा फोड़ लिया, कठै पड़्यो है हुक्क॥

डूमणी जबाब दियो—

बोलां नहीं, चालां नही, घर में आंधा-घुप्प।
चुल्है पाछे आळो है, बठै पड़्यो हैं हुक्क॥

(२७)

राजस्थानी नारी-समाज में 'होई' रै बरत पर पूरो ध्यान दियो जावै है। लुगायां माटी री होई बणायर पूजै अर कहाणी सुणै। इण विधान पर एक लोक-कवि कंयो है—

आप ही लीपै, आप ही पोतै
आप ही मांडै होई।

इण होई पा बेटो मांगै,
तेरै हियै की क्यूं खोई ।।

(२८)

एक ठाकर कनैं बारठजी बैठ्या हा अर खवास कासण मांजै हो। बारठजी नैं देखर खवास बोल्यो —

नाई मत कर चतुरभुज, चारण कर ओ नाथ।
राखूंडै में बैठ्यो रैवै, जूठण उपरां हाथ ।।

नाई रा बोल सुणर बारठजो बोल्या—

चारण मत कर चतुरभुज, नाई कर ओ नाथ।
आधी गादी बैठगो, मस्तक ऊपर हाथ ।।

(२९)

चारण अर भाटां रै झगड़ै री बात पुराणी है। एक बार एक भाट बिगड़ कर एक चारण नें तानो मार्‌यो -

चारण, चींचड़, चुरणिया, खटमल जेया जूं।
मैं पूछूं करतार नें, (वो) इता बणाया क्यूं ।।

चारण तत्काल उत्तर दियो —

भाट, टाट, गाडर, गंडक, सब कोई रै होय।
चारण, चंवर, चतर नर, गढपतियां रै होय ।।

(३०)

हळां री रूत में रावत रोळो कर्‌यो—"म्हारै हळ आया, म्हारै हळ आया।" जद पाड़ोसो सांचली सुणाई—

रावतिए रै नौ हळ आया, साढ़े आठ पराया।
आधै हळ में चोथी पांती, हळ रावत रै आया।

(३१)

एक चमार रै सगो आयो। रात रो वखत। कपड़ा हा कोनी। कठै सुवावै! सगै नैं धूणी पर बैठा दियो अर चमारी नैं बोल्यो—

धावळियो तो तळै बिछावो, चांदा छानी ओढो
म्हे अर सगोजी बातां करस्यां, थे घर में जा पोढो॥

(३२)

एक डूमणो आपरी गाय बेचर घोड़ो मोल ले लियो। अब दूध-दही तो ल्हुकगा अर घास ल्यावण रोही में जाणो पडै। जद पिसतायर बोली—

दूध दही सैं धापगी, चढ़वा नैं मन चाल्यो।
ठाली बैठी डूमणी, घर में घोड़ो घाल्यो॥

(३३)

एक भोजन-वीर री वात सुणर लोग भोत सुख मानै—

जे कोई घालै राब सिळाई।
तो दो कोस री के ऊँळाई॥
जे कोई घालै खीचड़ खाटो।
तो पांच कोस रो के आंटो॥
जे कोई घालै चावळ-भात।
तो दस कोस री के ही बात॥

जे कोई घालै दाळ-बाटी।
तो चढ जावै डूंगर री घाटी॥
जे कोई घालै लाडू-पेड़ा।
तो लांघ ज्या देस, लांघ ज्या खेड़ा॥

(३४)

घणखावू लोगां री बात सुणर घणो आनंद आवै। एक लुगाई आपरी नणद नैं बोली—

साठां कोसां लापसी, सोवां कोसां सीरो।
कान पड़्यो छोडै नहीं नणद बाई थारो वीरो॥

(३५)

एक सन्तोखण लुगाई री बात सुणो—

एक सेर री सोळा पोई, सवा सेर री एक।
आप निगोड़्यो सोळा खाग्यो, मैं संतोखण एक॥

(३६)

मालण अर कुम्हारी सीर म ऊँट भाड़ै करयो। बोरै में एक कानी मालण घाल्यो साग पात अर दूजै कांनी कुम्हारी घाल्या घड़ा-हांडी। दोनूं दूसरै गांव बेचण चाली। गैलै में ऊँट आपरी नाड़ फेरै अर मालण रै साग पात पर मुंह मारै। आ बात देखर कुम्हारी हांसी। जद मालण कैयो—

हड़हड़ हँसै कुम्हार की, मालण का चर रह्यो बूंट।
तूं के हंसै कुम्हार की, जांणै किस करवट बैठै ऊंट॥

(३७)

शेखावाटी रा कई ऊकारान्त नांव—वाला गांव-नगर आज पुरसवाचक मान्या जावै है पण पैली वे स्त्रीवाचक ही मान्या जावता ।

कांदा खाया कमधजां, घी खायो गोलां ॥
चूरू चाली ठाकरां, बाजंते ढोलां ॥ १ ॥
स्यामा सूरजमाल रा, शेखां घरां सपूत ।
सांखु नै सीधी करी काढलो भोमो भूत ॥२॥
सतरा सौ सत्तासिया, अगहन मास उदार ।
सादै लीनो झूंझणूं, सुद आठैं सनिवार ॥ ३ ॥
मतो कस्यो मोतीसिंघ ठाकर, कोलिंडो कूटूं ।
भली करी माल्याळा ठाकर, लुटवा दी लूटूं ॥ ४ ॥
बसो बिसाऊ चौगुणो, फोज न आवै फेर ।
बदस्यावां मालम पड़ी, स्याम तणी समसेर ॥ ५ ॥

(३८)

एक भील खेत बावण खातर चाल्यो अर सोनचीड़ी रा सूण लेवण रो विचार कस्यो । पण सोनचोड़ी तो बांई बैठी ही । भील भागर उण नैं दाहणो लेवण री चेष्टा करी पण वा उडर दूर चली गई । भील सूण लेवण नैं फेर भाग्यो पण सोनचीड़ी फेर उडगी । यूँ करतां घणी बार होई तो आगै भील नैं एक लेल्ही दाहणी बाजू बैठी मिली भील लेल्ही नैं देखर बोल्यो—

कबरको चीड़ी नैं जाण दे, तूँ आ म्हारी ल्हेलां।
ऊपर होवै बांजरी, अर नीचै होवै वेलां॥

(३६)

एक डूमां री छोरी रो ब्याव राजा रै सागै हुयग्गो। राजाजी नई राणी रो घणो सनमान करता। राणी आप रो थाळ महल में मंगवाती अर भीतर सैं सारी खिडकियां अर किंवाड़ बंद कर एकली बैठती। पछै फलका आळै में धर कर हाथ जोड़ती अर कैवती—"जजमान, रोटी देवो।" कई दिनां पछै राजा नैं पूरी बात रो वेरौ पड्यो, जद डूमणी नै पार करी।

जात सुभाव न जा कदे, मांग्योड़ो खावै।
जे राणी हो डूमणी, तो आळै धर खावै॥

(४०)

एक वाणियो कमायर आप रै घरां आवै हो। गैलै में एक गांव आयो अर रात हुई, जद कुम्हारी रै घर में बासो लियो। बाणियो धन री रुखाळी में सारी रात जागर काटी अर कुम्हारी मोज में सोई। दिन ऊगो बाणियो बोल्यो—

सुख सोवै कुम्हार की, चोर न माटी लेय।
गधियो बांध्यो खाट रैं, चाक सिरहाणै देय॥

—

पशु-पक्षी

वन में दव लागी। एक रूंख पर हंस रैवतो। लाय देखर रूंख हंस नैं बोल्यो—

लाय लगी वनखंड में, दाझ्या चन्नण वंस।
म्हे तो दाझ्या पंख बिन, तूं क्यूं दाझै हंस॥

हंस पडूत्तर दियो—

पान मरोड़्या रस पियो, बैठ्यो एकण डाळ।
थे दाझो, म्हे उड चलां, जीणो कितोक काळ॥

(२)

एक वार सरवर अर हंस री आपस में नाराजगी होई। सरवर बोल्यो—

जावै तो बरजूं नहीं, आवै तो आ ठोड़।
हंसां नैं सरवर घणा, सरवर हंस किरोड़॥

हंस रूस कर जावण लाग्यो। पण सरवर री सोभा हंस सैं अर हंस री सोभा सरवर सैं। सरवर फेर समझायर बोल्यो—

हंसा, सरवर ना तजो, जे जळ खारा होय।
डाबर-डाबर डोलतां, भला न कहसी कोय॥

(३)

एक आदमी कोयल नैं बोल्यो—

कोयल, बोल सुहावणा, बोलै इमरत बैण।
किण कारण काळो हुई, किण गुण राता नैण॥

कोयल पडूत्तर दियो—

बागां-बागां मैं फिरी, कठै न लाध्या सैण।
तड़फ-तड़फ काळी हुई, रोय रोय राता नैण॥

(४)

एक लुगाई मोर देख कर बोली—

परबतिये का मोरिया, डूंगरिए का राव।
गळ घालूं तेरै घूघरा, आंगण चुगबा आव॥

मोर पडूत्तर दियो—

आंगण तेरो खुड़दड़ो घर में बोड-बिलाव।
देवर तेरो लाडलो, करसी म्हां पर घाव॥

लुगाई पाछी बोली—

आंगण कळी फिरायद्यूं, मारूं बोड बिलाव।
देवर पर कामण करूं म्हारै आंगण आव॥

(५)

एक विरहण मोरिए नैं बोली—

सिर काटूं रै मोरिया, काटूं सिर रो फूल।
आधी रातां गहकियो, हिवड़ै पड़ी ज हूल॥

मोरियो पडूत्तर दियो—

म्हे डूंगर रा मोरिया, कांकर पेट भरांह।
रूत आयां बोलां नहीं, तो हिवड़ो फाट मरांह॥

(६)

एक पपैये पर वन में बडो संकट पड्यो—
पप्पीहा बड ढंखरो, ऊपर खिंवै सिंचाण।
आहेड़ी सर संधियो, किण विध बचै पिराण॥
बिचारो पंछी भगवान नै सुमरयो भगवानभगत रा प्राण उबारया—

आहेड़ी डसियो भंमग, धुर डिग छूट्यो बाण।
लाग्यो जाय सिंचाण कै, जै जै दयानिधान॥

(७)

एक सूवो उडतो-उडतो एक नये वन में आयो अर घणा सोवणा फळ लटकता देखर चांच चलाई पण बै फळ तो खुजली पैदा करणिया हा। सूवै रै खाज चाली जद बो घबरायर बोल्यो—

उण वन रो सूवटो, इण वन कदै न आवै।
भूल्यो-चूक्यो आवै तो, लटकण-फळ नां खावै॥

(८)

सांझ रै बखत चकवी रो वियोग देखर एक पणिहारी बोली—

सांझ पड़ी दिन आथक्यो, चकवी भयो वियोग।
पणिहारी यूं भाखियो, ये विधना का योग॥

पणिहारी रो बोल सुणर चकवी जबाव दियो—

जा पणिहारी भर घड़ो, कर न पराई बात।
जिको तिहारो दिन हुयो, तिको हमारी रात॥

(६)

वन में एक केतकी रो झाड़ हो। बठै एक भँवरो रहतो। एक बार भँवरो थोड़ी सी देर दूर गयो, गैल सूँ दव लगी अर केतकी रो झाड़ बळर राख होयगो। भंवरो पाछो आयो तो भोत दुखी होयो अर झाड़ री राख में लोटण लाग्यो। इतरै में ही च्यार लुगायां बैठे सूँ नीसरी अर भंवरै री या लीला देखर एक बोली—

बाग नहीं, नां बावडी, फूल नहीं परसंग।
गहलो भंवरो बावळो, राख रमावै अंग॥

दूजी उत्तर दियो—

पैंली ही आ केतकी, रैंतो वां रै संग।
दव लागी तो जळ गई, अब राख रमावै अंग॥

तीजी बोली—

प्रीती हो तो क्यूँ रह्यो, बळियो क्यूं नां संग।
गहलो भंवरो बावळो, अब राख रमावै अंग॥

चौथी उत्तर दियो —

होतो तो रहतो नहीं, बळतो वां रै संग।
प्रीत पुराणी कारणै, ओ राख रमावै अंग॥

(१०)

एक सिंघ बूढो हुयगो। चाल्यो जावै कोनी भागणो तो दूर। जद एक तळाब कनै आयर बैठगो। अब भूख लागै, जद कनैं आवै जिकै मींडक्कां नैं मारणा सरू कर दिया। घर-धणो री आ हालत देखर सिंहणी समझावणी दी —

सिंघणी कैवे सिंघ नैं, आ ओछी मत धार।
इण हाथां हाथी हत्यो, अब मींडक मत मार॥

(११)

एक संघ दूसरै गांव जावै हो। मारग में एक तळाव आयो। दो लुगायां पाणी पीवण चाली। पाणी सूक चुक्यो हो। चोभी में थोड़ो सो आलेड़ो हो। कनैं ही एक हिरण अर अेक हिरणी मर्‍या पड़्या हा। एक लुगाई बोली —

खड़्यो न दीखै पारदी, लग्यो न दीखै बाण।
मैं तनैं पूछूं हे सखी, किण विध तज्या पिराण॥

दूसरी पडूत्तर दियो —

जळ थोड़ा, नेहा घणा, लग्या प्रीत का बाण।
तूं पी, तूं पी, करत ही, दोनूं तज्या पिराण॥

(१२)

साल्ही जाटणी रै 'मणियार' नांव री एक भोत आछी भैंस ही। एक बर मणियार भैंस खोयगी तो साल्ही भोत दुख कर्‍यो। अब वा यो नेम ले लियो कै कोई भी बटाबू घरां आवै जद उण नैं कैवै कै जठै भी भैंस्यां बैठी मिले तो यो दूहो सुणाय देवै—

काठो भस्यो बुहाणियो, सुरंगी सागण वार।
साल्ही तणो संदेसड़ो, सांमळजे मणियार।।

एक चारण नैं भी साल्ही या ही बात कैयी अर बो चारण भैंस्यां नैं ऊपरलो दूहो सुणावतो फिर्यो। एक दिन संजोग इसो हुयो कै चारण तो भैंस्यां नैं यो दूहो सुणायो अर एक भैंस खड़ी हुई। जद वा भैंस चाली तो उण रै बाग री दूजी भी सगळी भैंसा लार हुयली। वा मणियार भैंस ही। सगळी भैंस्यां ने लार लेयर साल्ही रै घरां आ पूगी।

(१३)

वन में हिरण पारधी री राग पर मस्त होयो, जद हिरणी बोली—

सुण काळा कामण कहै, सींगाळा भड़मल्ल।
आप हुया वस राग रै, हिरण्यां कोण हवल्ल।।

हिरणी रा बोल सुणर हीरण जबाब दियो—

सरप रिझ्यो पकड़ाय ले, म्रिग रीझ्यो खा मार।
नर रीझ्यो कुछ दे नहीं, वां रो धिक्क जमार।।

पछै हिरण पारधी नैं बोल्यो—

मो सींगन रो नाद कर, मो तुच तळै बिछाय।
मो आंतन री तांत कर, गांव गांव तूं गाव।।

(१४)

एक जाट रै भैंस रो नांव भूरी अर बळद रो नांव कूंभो हो। जाट भैंस री सार करतो अर बळद नैं भूखो राखतो। बरखा री

रूत आई। हळ वावण रै वखत कुंभै नैं बुलायो जद कुंभो बोल्यो—

खळ काकडा भूरी खाती, घी को देती लुम्भो।
इन्दरियो घररायो जद अब, याद आयो तनैं कूंभो॥

(१५)

एक विणजारै रो सब सूं घणो मजबूत बळद आगै चालतो अर वैं रै गळै में टोकरो (घंटो) बाजतो। जद बळद एकदम बूढो हुयगो तो आप रै मालिक बिणजारै नै बोल्यो—

कान टळाटळ खुर बिटळ, सींगां छोडी संध।
ले सांई, ओ टोकरो, ओरां रै गळ बंध॥

(१६)

चालतां-चालतां एक कूंजड़ै रो बळद बैठग्यो। जद कूंजड़ो बोल्यो—

अबकै मजल पुगा भई डूंडा।
गुवांर का देवूंगा दोय कूंडा॥

बळद जवाब दियो—

तेरै घरां नार कुनार।
घालै तुस बतावै गुवांर॥

कूंजड़ो फेर बोल्यो—

डूंडो बळद पाट की थई।
चाल रै डूंडा सांझ हुई॥

बळद फेर जबाब दियो—

थैया थैया सिर पर धरो।
आ मजाक ओर कठै करो॥

(१७)

एक घोड़ी बूढी हुयर कोई कामरी नीं रैयी जद वैं रो धणी खुली छोड़ दी। विचारी घोड़ी भूख मरती आपरी जिन्दगी सैं तंग आयगी। संजोग सैं एक दिन घोड़ी नैं भगवान् मिलगा। घोड़ी अरदास करी, "महाराज, मेरी खोड़ छुटावो।" भगवान उत्तर दियो—

हर सैं मिली हालती घोड़ी।
मोत नहीं तो चाल मकोड़ी॥
न्हासी नहीं तो धोसी पांव।
मरसी नहीं तो आसी ताव॥

(मकोड़ी नांव री तळाई रो पाणी भोत खराब हो, जे कोई बो पाणी पी लेवतो तो प्राणां पर आ बणती।)

(१८)

एक बारठ जो नै ठाकर भोत बूढी सांड भेंट करी। बारठजी सांड कनैं जाकर बोल्या—"ए सांड, तूं तो कैरू-पांडवां के बखत की सी दीखै ? सांड पडूत्तर दियो—

जद हेमाचळ गोरां ब्याही, जद मनैं सांड टोरड़ी जाई।
जद भागीरथ गंगा आणी, जद मैं होई टोड तिहाणो।
जद पणिहारां पोहकर कीन्यो, जद मैं दूध घणोई दीन्यो।
जद पुसगर रै बन्धी पाळ, जद मैं चरती चारे री दो फाल।
जद होया हा अरजन भींव, जद मैं चरती वारा गांवांरी सीव।
बीकानेर बसाई बीकै, जद मैं ही टोळ में टीकै।
जळक जुळक काई फांकै आल, कैरू पांडूतो होया है काल।

(१६)

एक अचम्भो म्हे सुण्यो, घर तेल्यां कै पास।
तीन चरण धरती रह्या, चौथो चढ्यो अकास॥

—(कुत्ता)

(२०)

सारंग ले सारंग उड्यो, सारंग बोल्यो आय।
जे सारंग मुख से कवै, तो मुख का सारंग जाय॥

—(मोर-सांप-बादल)

(२१)

जड़ सूकी ऊपर हर्‌यो, पान पान मैं चंद।
मैं तनैं पुछूं हे सखी, बादल बरण सुरंग॥

—(मोर)

——

विविध

मरुधरा री महिमा लोकवाणी में सुणो—

नर चंगा, नारी चंगी, चंगा जो पहरै वेस।
भाग बड़ा तो मानवी, पावै मरुधर देस॥

(२)

ढोलो मरवण नैं पूछ्यो—

खेजड़ रूंख, भंरुट खा, ऊंडो जळ वीयांह।
ढोलो पूछै मरवण, पूगळ रूप कियांह॥

मरवण उत्तर दियो—

किरसन छोड़ी गोपिका, गोकल री गलियांह।
ढूंढत ढूंढत स्याम नैं, थक बैठी थलियांह॥

(३)

गुलाब री साखा पर सोवणा फूल देखर एक जणो बोल्यो—

कक्का सुण करतार तूं, ऐसी तेरी भूल।
कंटक झाड़ गुलाब रो, जिण पर ऐसा फूल॥

ओ बोल सुणर गुलाब उत्तर दियो—

सस्सा सीस कटाय कर, सिर पर मेली धूळ।
इतरा दुखड़ा मैं सह्या, जद पाया ऐसा फूल॥

(४)

एक बर सगळा नाज भेळा होयर आप-आप रा गुण बताया—

चावळ कैवै, मैं उजळो धान।

आए गए रो राखूं मान॥

गीवूं कैवै, मेरो चीऱ्यो पेट।

मन्नैं खावै राजा सेठ॥

चणो कैवै, मेरो तीखो नाक।

मैं सुधारूँ बत्तीस पाक॥

जो कैवै, मेरी तीखी अणी।

मनैं खावै उण रो रामधणी॥

बाजरो कैवै, मैं पीळो जरद।

मन्नैं खावै मूंछयाळा मरद॥

मूंग कैवै, मैं हऱ्यो घणो।

भरे बजारां फिऱ्यो घणो॥

मोठ कैवै, मैं गोळ मटोळ।

भरी सभा में बावूं टोळ॥

(५)

एक जणो सिंधड़ै (खाल रै कुप्पै) नैं कैयो—

"सूको रैग्यो सिंधड़ा, सदा तेल रै संग।" सिधड़ो पाछो उत्तर दियो—

सूको रैयो तो मैं रैयो इंमें मीन न मेख।

ओर खाल सै नरम हुवै, पण मेरी करड़ाई तो देख॥

(६)

एक आदमी दिसावर जावै हो। एक सूण चोखो हुयो पण ओर सूण न्यावू हुया। सूणां रो विचार स्याणें नें पूछूयो, जद उत्तर मिल्यो—

लच्छण एक कुलच्छण च्यार।
झुग्गो बिछायां सूती नार॥
आगं अरंड अर पीछै पोळो।
के करैगी बिल्ली धोळी॥

(७)

दो साध बातां करै हा। एक जणो सवाल कस्यो—

अकड़ बुझै फक्कड़ नैं, आकर बात अड़ी।
ऐरण हथोड़ो अ संडासी, पहली कुण सी घड़ी॥

दूसरो साध जबाब दियो—

विरमा एरण, बिसनू हथोड़ो, संकर साध संडासी।
ईं तीनवां री विध तो स्याणा, एक सागै ही खासी॥

(८)

खट-दरसण इण भांत गणाया है—

जोगी, जंगम, सेवड़ा, सन्यासी दरवेस।
छठा दरसण ब्रह्मका, यां में मीन न मेख॥

एक दूजो दूहो इण भांत भी है—

ब्राह्मण, सेताम्बर वळे, जोगी जंगम जाणि।
दान सन्यासी सोफिया, खट-दरसण वाखाणि॥

(९)

एक काणो गुवाळियो तळाब पर भैंस्यां चरावै हो। बो एक विरछ रै नीचै पांख चुगै अर निगै राखै, कदे भैंस पाणी में न जाव। संयोग सैं मुंह ऊपर कस्यो अर मोरिए री पांख सीधी देखण हाळी आंख में पड़ी। गुवालियो आंख पर हाथ धर कर बोल्यो—

पांख चुगतां आंख फूटी, फूटी आंख दांणी।
दोनूं आंख बराबर होगी, जा ए भैंस पाणी॥

(१०)

एक लुगाई आप रै धणी रा धोळा केश देखर बोली—

धोळा आया बालमां, बहळी लागी खोड़।
हंसै नगर री नारियां, दे ताळी मुख मोड़॥

आ बात सुणर बो पडूत्तर दियो—

धोळ बधावो हे प्रिया, मोत्यां थाल भरेह।
जोबन नदी अथग्ग जळ, ऊतरियां कुसलेह।

(११)

करणावत रजपूतां री कोटड़ी में एक बिळाव हीलगो अर उजाड़ करै लागो। चेष्टा करणै पर एक बर बिलाव पकड़ाई में आयगो जद् करणांवतां उण नैं बांध्यो। रोहीमें ले जायर मास्यो। बारठजी करणावतां री कीरत इण भांत गाई—

कड़ बांधी काठो कस्यो,
गळ में घाली लाव।

करड़ो कूंटी करणावतां,
मारयो बोड - बिलाव ॥

(१२)

कवि री वाणी में जैसळमेर रो बखाण सुणो—

घोड़ा कीजे काठ रा, पिंड कीजै पाखाण।
वसतर कीजे लोहरा, जद देखो जेसाण ॥

(१३)

एक भाट नैं जजमान घोड़ी देई। घोड़ी छोटी सी ही अर भाट लांमो हो। घोड़ी पर चढ़ कर भाट बोल्यो —

थे म्हानैं घोड़ी देई चढ़ कर करां सलांम।
म्हारा पग ऊँचा करया, थारा करसी राम ॥

(१४)

एक बिरामण आसपास रै गांवां में चून (आटो) मांगर आपरो काम चलातो। जद बिरामण बूढो हुयो तो गांव रा लोग कैयो कै दादा, अब तो कोई तीरथ कर। इतरो सुणर आसपास रै गांवां नैं ही तीरथ रूप बतावतो बिरामण बोल्यो—

हरियासर तो हर री पैड़ी, गिड़गचियो गिरनार।
मालपरो तो मथरा नगरी, कंतलसर केदार ॥

(१५)

एक ढाढी बीकानेर वाटी रै खारिये, जसरासर अर पोटी

तीनूं गावां में गयो पण कठें ही रोटी री विध कोनी बैठी, जद बोल्यो—

उरलै पासै खारियो, परलै पासै पोटी।
जे जसरासर जावै बटावू, तो पल्लै बांध ले रोटी॥

(१६)

एक ठाकर ढाढी नैं एक घणो बूढो ऊँट दियो। जद ढाढी यूं अरज करी—

दुवारै आगै तपसी तापं, दांतां सै लपसी खाय न जाई।
चीलां रै घर चाव हुयो, अर कागां रै घर बंटी बधाई।
बीसूं कूकर लारै लाग्या, सिंझ्या गादड़ रोळ मचाई।
अरज मेरी सरकार सुनो, एक ऊंट दियो कै विराध लगाई।

(१७)

एकठाकरां नै आप री कीरत सुणनै रो बडो चाव हो पण देण-लेण में घणा काठा हा। एक बर एक डूम नै आपरो पुराणो कुड़तो राजी हुयर दियो। कुड़तो थोड़ ही दिनां में फाटगो, जद डूम ठाकरां नै इण भात कीरत सुणाई—

कविगण भाखै क्रीत, देखकर बडा दुवारा।
दूहै रोटी दोय, गीत का आना ग्यारा।
सुणकर दूहो गीत, सुरांपत होज्या सूरा।
वकसै कपड़ो दान, पांच दिन चालै पूरा॥

(१८)

एक राजघरानै में कोठारी बडो दैड़ै सुभाव रो हो। कोई चिट्ठी तुलावण आवतो जद कम तोलतो अर भगड़ो करतो। लोग उणरी कीरत बखाणी—

बतलायां बोलै नहीं, जे बोलै तो आडो।
भलो बठायो ठाकरां, यो चिमक च्यानणो पाडो॥

(१६)

राजा भोज साथियां रै सागै सिकार नै चाल्या। गैलै में एक कूड्योड़ी डोकरी आवै ही। राजा भोज बोल्यो—

नीची नीची डोकरी, कै रा काढै खोज?

डोकर पडूत्तर दियो—

मेरै सैं तेरै गई, सुन रै राजा भोज।
तेरै सैं भी जायगी, जैं रो कोनी लाधै खोज॥

(२०)

नरसिंह भगवान की महिमा सुणो—

जणणी जण्यो न विध पड़यो, रवि की पड़ी न दीठ।
पलक मांय परगट भयो, जाणै सारी सीठ॥

—

(२१)

सीयाळै, गर्मी अर बरखा रुतां रा गुण सुणो—

सिरख पथरणै पौढणो, तरुणी तर ताम्बूल।
तातो जीमण तावड़ौ, सीयाळै अनुकूल ॥ १ ॥
कोयल कुहकै, फूल में, मधुर सुगंधी होय।
आंबारस शीतल मधुर, प्यारी लागै जोय ॥ २ ॥
धरती सींचै मेहजद, धान नीपजै जाण।
धरम धाम सुख भोग में, संचारै नव प्राण ॥ ३ ॥

(२२)

कवि वाणी में एकादसी कै वरत को हाल सुणो—

भोर उठ स्नान कियो, सेर पक्को दूध पीयो,
सैंकड़ी सिंघाड़ा खाया या तो बात आदी है।
दोफारी में भंग छाणी, सेर दूध पाव पाणी,
अणगिणती अमरुद खाया आई नहीं बादी है।
पाव सेर बरफी खाई, पाव सेर पेड़ा खाया,
सेर सक्करगन्दी खाई जीवड़ो सुवादी है।
कहै ब्रह्मदत्त, ऐसो होय नित्त व्रत यारो,
करी तो एकादसी पण द्वादसी की दादी है ॥

(२३)

एक मोट्यार आप की लुगाई नैं लारलै आसण ऊँट पर बठायां गाँव सैं निकळयो। आगे जातां वाँनैं आगलै आसण पर एक लुगाई अर लारलै आसण पर एक मोट्यार चढ़्या मिल्या।

पहलो मोट्यार बोल्यो—

ऊँट चढ़्या गांव से निकळया, भला मनाया सूण।
म्हे आपस में लोग लुगाई, थे आपस में कूण॥

इतरी सुणकर दूसरो मोट्यार बोल्यो—

आंकै म्हांकै हेत घणो है सीर बवं है खेती।
इं की सासू मेरी सासू, दोनूं हैं मा-बेटी॥

(सुसरो अर बेटे की बहू)

(२४)

एक जोध जुवान लड़की गांव सै चाल कर सहर की दुकान में चीज बिसावण नं आई। दुकानदार अचपळो हो। वो लड़की नैं बोल्यो—

बालक-पोखण पिव रमण तिरिया हेंदो ते।
दाड़म ज्यूं यो पाकियो, तूं थोड़ो मनैं दे॥ (स्तन)

दुकानदार को बोल सुणकर लड़की उत्तर दियो—

नीच घरां में नीपजै, ऊँच घरां में जाय।
जे थानैं यो चायजै, तो पहली वो खाय॥ (जूतो)

लड़की को जबाब सुणकर दुकानदार चुप होयो।

(२५)

एक आदमी मेळ गयो पण पाछो आयो जद उदास हो। मारग में एक उदासी को कारण पूछ्यो तो बोल्यो—

मेळै गया निरास, मन मेंळू मिळिया नहीं।
मिळिया पांच पचास, जासूं मन मिळिया नहीं॥

※ पांच ऐतिहासिक प्रवाद

—रानी लक्ष्मीकुमारी चुण्डावत

(वरदा वर्ष २, अंक ५ से साभार)

१—रंगरेला :

रंगरेला कवि का वास्तविक नाम वीरदासजी था। ये वीठू शाखा के रोहड़िया चारण थे। इनका जन्म मारवाड़ के सागड़ गांव में हुआ था। इन्होंने "जैसलमेर रो जस" नामक काव्य की रचना की थी। जिसमें उन्होंने जैसलमेर का इतना सच्चा चित्रण किया कि वहाँ के रावल हरराजजी ने नाराज होकर इन्हें कैद में डाल दिया। बीकानेर के राजा रायसिंहजी ने इन्हें वहाँ की कैद से छुड़ाया। इनका नाम रंगरेला कैसे पड़ा, इसके बारे में राजस्थानी में निम्नांकित प्रवाद प्रसिद्ध है।

बारहठ वीरदासजी में काव्य रचना करने की प्रतिभा प्रकृति-प्रदत्त थी। उन दिनों जालोर पर नवाब कमाल खाँ का अधिकार था। कमालखाँ बड़ा साहित्य-प्रेमी और कवियों की कद्र करने वाला था। दूर-दूर से कवि इनके यहाँ आया-जाया करते थे। वीरदासजी भी अपनी काव्य-प्रतिभा कमालखाँ को दिखलाने जालोर गये। उन्होंने सोचा, "मार्ग में कपड़े मैले हो गये हैं, इन्हें धोकर ही शहर में प्रवेश करना चाहिए।" जालोर के बाहर ही एक कुंवे पर बैठकर वे अपने कपड़े धोने लगे।

नबाब कमालखाँ घोड़े पर सवार होकर उधर से निकला और उसी कूंवे पर अपने घोड़े को पानी पिलाने लगा। वीरदासजी मुक्कों से कूट-कूट कर अपने कपड़े धो रहे थे। पानी के छींटे उछल कर कमालखाँ के घोड़े को लगे। कमालखाँ ने डाँटकर कहा, "ओ कुट्टण, कपड़े कूटना बन्द कर।"

यह सुनते ही वीरदासजी ने मुड़कर देखा सवार की पोशाक, हथियार, रोबदार चेहरा और घोड़े को देखकर उन्होंने अनुमान लगा लिया कि यह व्यक्ति नबाब कमालखाँ ही है। वीरदासजी कुछ बोले नहीं। फिर जोर-जोर से कपड़े कूटने लगे। अपनी यह अवज्ञा देख कमालखाँ को क्रोध आ गया। उसने डपट कर कहा, "ओ कुट्टण, उठ यहाँ से।"

कुट्टण शब्द सुनते ही वीरदासजी ने उसी समय कविता में उत्तर दिया। कविता के पहिले शब्द थे—

"कुट्टण तेरा बाप"

बाप के लिए "कुट्टण" शब्द को सुनते ही कमालखाँ का हाथ तलवार की मूठ पर जा पड़ा। मूठ पर हाथ पहुँचते-पहुँचते कवि ने पद पूरा किया—

"जिकै लाहोरी लुट्टी"

बाप के लाहोर लूटने की ख्याति सुन कमालखाँ का हाथ वहीं मूठ पर रुक गया। वीरदासजी ने फिर से ललकार कर पंक्ति बोली—

"कुट्टण तेरा बाप"

ऐसा सुनते ही कमालखाँ की आँखों में फिर से रोष की लालिमा छा गयी।

उसकी आँखों में देखते हुए वीरदासजी ने अधूरी पंक्ति को पूरा किया —

"जिकै सिरोही कुट्टी"

अर्थात् कुट्टण तो तेरा बाप था जिसने सिरोही को कूटा था। ऐसा सुनते ही कमालखाँ के आँखों में रोष की जगह गरूर झलकने लगा। घोड़े की लगाम उसने ढीली छोड़ दी। वह उत्सुकता से कवि के मुँह की ओर देखने लगा कि आगे क्या कहता है। वीरदासजी बोलने लगे —

कुट्टण तेरा बाप, जिकै लाहोरी लुट्टो।
कुट्टण तेरा बाप, जिकै सिरोही कुट्टी ॥
कुट्टण तेरा बाप, जिकै बायड़गढ़ बोया।
कुट्टण तेरा बाप, जिकै धूंमड़ा धवोया ॥
कूटिया प्रसन्न खागां किता, झूंझै अर साँके धरा।
मो कुट्टण न कह कमालखाँ, तूं कुट्टण किणियागरा ॥

कुट्टण तेरा बाप था जिसने लाहोर और सिरोही को कूटा। तेरा बाप ही कुट्टण था जिसने बाहड़मेर और धूंमड़ा को कूटा।

तू ने अपनी तलवार से शत्रुओं को इतना कूटा है कि पृथ्वी तुझसे डर रही है।

ओ कमालखाँ तू मुझे कुट्टण मत कह। कुट्टण तो तू खुद है।

कमालखाँ के कानों में कविता-सुधा बरस रही थी। वह एक-एक शब्द पर झूम रहा था। उसने तो कुट्टण शब्द का प्रयोग गाली के रूप में किया था पर सरस्वती पुत्र चारण कवि ने उसी

"कुट्टण" शब्द को उसके पिता की और उसकी स्वयं की यश-प्रशस्ति के रूप में बदल उन्हें अलंकृत कर दिया।

कमालखाँ अपने पर काबू न रख सका। कविता समाप्त होते-होते घोड़े से कूदकर उसने कवि को छाती से लगा लिया और वह बोला—

'कौन कहता है कि तुम कुट्टण हो भाई। तुमने तो रंग का रेला बहा दिया। तुम तो रंगरेला हो।" उसी दिन से वीरदासजी रंगरेला नाम से प्रसिद्ध हो गये। साहित्य और इतिहास इन्हें रंगरेला नाम से ही सम्बोधन करता रहा है।

१. बायड़गड़—बाड़मेर आजकल राजस्थान और पाकिस्तान के सीमा पर स्थित है।
२. धूंमड़ा— पहाड़ी पर बना हुआ एक किला है। इसके आस-पास का इलाका चौरासी कहलाता था तथा यहाँ मीणों की बस्ती थी। आजकल भाद्रा जून बसा हुआ है उसी के पास यह स्थान है।

२—छः कराड़ पसाव :

बीकानेर के राजा रायसिंहजी की पुत्री का विवाह आंबेर के राजा मानसिंहजी के साथ हुआ था। मानसिंहजी और राय-सिंहजी ने साथ रहकर अटक के युद्ध में अकबर बादशाह को अच्छी सेवायें दी थीं। राजा रायसिंहजी बड़े काव्य प्रेमी थे। कवियों को दिल खोलकर इन्होंने करोड़ों रुपयों का दान दिया था।

रायसिंहजी ने अपने जीवन काल में पांच सौ गाँव, बीस

हजार हाथी, पचास हजार घोड़े, सौ लाख पसाव और तीन करोड़ पसाव कवियों को दिये। एक करोड़ पसाव दुरसा आढ़ा को, दूसरा लखा बारहट को और तीसरा शंकर बारहट को दिया। तीसरा करोड़ पसाब सवा करोड़ की लागत का था। यह कवित्त इसकी साक्षी देता है—

पाता लाख पसाव, कमंध सत सहस जु कीना।
कमां सवा मुर कोड़, दुरस लख संकर दीना॥
सिंधुर दोय सहस्स अरध लख वाजी अप्पे।
सीरोही सुल्तांण, दूद अरबुद्ध समप्पे॥
जोधांण पाट प्रतापे जदन, सुजस जिते सिस भांण रे।
सत पंच उदक दीना सुपह, कारण जस कलीयांण रे॥

दुरसा आढा इस समय का ख्याति प्राप्त कवि था। उसके काव्य पर रीझ कर राजा रायसिंहजी ने करोड़ पसाव प्रदान किया था।

अपने पिता के इस कार्य पर उनकी पुत्री (राजा मानसिंहजी की पत्नी) ने बड़े गौरव का अनुभव किया। उन्होंने भारी जलसा मनाया। राजा मानसिंह की डेढ़ हजार स्त्रियाँ थी, उन सभी को आमन्त्रित किया। अन्तःपुर में दरबार लगाया। राजा मानसिंहजी से उस दरबार में पधारने की अर्ज की। रायसिंहजी की पुत्री जलसा कर अपनी सौतों तथा ससुराल वालों को दिखलाना चाहती थी। राजा मानसिंहजी जनाना दरबार में आये। उन्होंने पूछा, "यह जलसा किस बात की खुशी में मनाया जा रहा है।"

बीकानेरीजी ने बड़े गौरव के साथ कहा, "मेरे पिता ने दुरसा आढ़ा को करोड़ पसाव देकर राजस्थान में अपना सिर सबसे ज्यादा गौरवान्वित किया है। कौन है, ऐसा रांजा दूसरा, जिसने करोड़ पसाव दिया हो ?"

राजा मानसिंहजी ने उस वक्त चुपचाप यह बात सुन ली। जलसा हो जाने के बाद बाहर जाकर उन्होंने अपने प्रधान को आज्ञा दी, "सवेरे मैं उठूं, उस समय छः चारण कवि और छः करोड़ पसाव तैयार मिले।"

सवेरे आज्ञा अनुसार सब प्रबन्ध था ही। छः करोड़ पसाव देकर उन्होंने दातुन किया। निम्न पद में उन कवियों के नामों का उल्लेख है –

पोळपात हरपाळ, प्रथम प्रभतां कर थप्पे।
दळ में दासो नरू, सहोड़ घण हेत समप्पे॥
ईसर कसनो अरध, बड़ी प्रभता बधाई।
भाई डूङ्गर भणे, क्रीत लख मुखा कहाई॥

अई-अई मान उनमान पहो, हाथ धनो धन धन हियो।
सूरज घड़ीक चढतां, समो, दे छः करोड़ दांतण कियो॥

इसके बाद भोजन के लिए जब राजा मानसिंहजी अन्तःपुर में गये तो बीकानेरीजी को सुनाकर उनकी एक सौत ने कहा, "लोगों के यहाँ तो एक करोड़ पसाव देने पर भी जलसे किये जाते हैं। यहाँ छः-छः करोड़ पसाव दे दिये पर जबान से एक शब्द भी नहीं कहा।"

यह सुनकर बीकानेरीजी खिसिया तो गई पर झट से सम्भल कर बोली, "ऐसे या तो मेरे पति हैं या मेरे पिता। राजस्थान में कोई दूसरा हो तो बताओ।"

३—चांदौड़ी रुपया :

उदयपुर के महाराणा भीमसिंहजी की बड़ी बहिन चांदकुंवरजी की सगाई जयपुर के महाराजा प्रतापसिंहजी के साथ हुई। ये वे ही महाराजा थे जिन्होंने जयपुर का प्रसिद्ध हवामहल बनवाया था। ये बड़े काव्य मर्मज्ञ और कला प्रेमी थे। इन्होंने कई काव्य ग्रन्थ रचे हैं। इन्हीं के शासन काल में जयपुर की चित्रकारी का उत्कर्ष हुआ। सगाई के कुछ मास उपरान्त ही दुर्भाग्यवश इनका देहान्त हो गया। इनके स्वर्गवास के समाचार मिलते ही चांदकुंवरजी ने माता से कह दिया—"आज से मैं अपना जीवन विधवा के समान बिताऊँगी। जब मैं उनकी वाग्दत्ता हो गई तो सदैव के लिए उनकी ही हो गई।" चांदकुंवरजी आजन्म प्रतापसिंहजी के नाम पर क्वांरी रही। उनका व्यवहार जयपुर के राजघराने के साथ ऐसा रहा मानों उनका विवाह हो गया हो। वहाँ वालों के साथ उनका पत्र व्यवहार होता था। जयपुर के परिवार सम्बन्धी मामलों में इनसे पूछा जाता और ये अपनी राय देतीं। आदमी आदि आते जाते रहते। जयपुर के महाराजा जगतसिंहजी भी इन्हें अपनी माता के समान मानते और अन्य राजमाताओं की भाँति व्यवहार करते। वे उनके हाथ खर्च के लिए जयपुर से रकम भेजते। चांदकुंवरजी के हाथ के लिखे कई महत्वपूर्ण पत्र जयपुर

महाराजा के निजी संग्रह में अभी तक मौजूद हैं। चाँदकुंवरजी उदयपुर में रहती थीं। वे दिल की बड़ी खेयाज और गरीवपरवर थीं और सैकड़ों व्यक्तियों का पोषण करती थीं। महराणा भी इन्हें बड़ा सम्मान देते थे। चांदकुंवरजी ने अपने नाम से सिक्का चलाया। यह चांदौड़ी रुपया कहलाता था। इस रुपये के बारह आने होते थे। मेवाड़ भर में इस सिक्के का खूब प्रचलन था। इनाम इकराम में यही रुपया दिया जाता था। सम्बत् १६८० तक बख्शीश इसी रुपये के हिसाब से दी जाती रही है। मेवाड़ में आदित्यगिरीजी नाम के एक अच्छे कवि हुए हैं। एकबार वे तीर्थयात्रा को जाने लगे तो महाराणा सज्जनसिंहजी ने उनके खर्च के लिए पाँच सौ रुपये बख्शे। बख्शीश में तो वहाँ चांदौड़ी रुपया ही दिया जाता था। इन्हे भी वही सिक्का मिला। उन्होंने सोचा बाहर जाने के लिए तो कल्दार रुपया चाहिए, चांदौड़ी तो चल सकता नहीं। इन्हें बटाने में रुपये के बारह आने ही हाथ आवेंगे। वे दूसरे दिन महाराणा से मुजरा करने गये तो व्यंगमय भाषा में यह दोहा कहा—

चांदबाई चाले नहीं, दूर सगा रे देस।
मन लाग्यो मेवाड़ सूँ, हरख्या फिरै हमेस॥

इस विनोद पूर्ण उक्ति पर महाराणा के साथ सारी सभा मुस्करा पड़ी और उसी समय पाँच सौ कल्दार रुपये देने का हुक्म दिया गया।

४— प्रति सीढ़ी एक हाथी और दस घोड़े :

बीकानेर के राजा रायसिंहजी के अटक के युद्ध में वीरता

और चातुर्य्य दिखाने पर अकबर बादशाह ने उन्हें गुजरात विजय के लिए भेजा। ये फौज मुसाहिब थे। अहमदाबाद के शासक अहमदशाह के साथ इनका घोर युद्ध हुआ। अहमदशाह जिस हाथी पर सवार था उस हाथी पर रायसिंहजी ने अपना घोड़ा कुदा कर वार किया। तलवार के एक ही प्रहार से हाथी की सुंड कट गई और दोनों दाँतुसल कटकर नीचे का जबड़ा कट गया। हाथी इस वार को सहन नहीं कर सका। उसका मुँह जमीन से जा लगा। उस समय रायसिंहजी ने बड़ी फुर्ति और साहस का काम किया। उन्होंने अहमदशाह को जीवित पकड़कर नीचे उतार लिया। उसे बन्दी देख गुजरात की सेना ने पाँव छोड़ दिये। अकबर की विजय हो गई। रायसिंहजी के भी अनेक घाव लगे। उनकी इस युद्ध में दिखाई हुई वीरता की सोहरत चारों ओर फैल गई। तब कन्या के लिए वर चुनते समय वर का सबसे बड़ा गुण, वीरता और दिलेरी देखी जाती थी। चितौड़ के महाराणा उदयसिंह ने रायसिंहजी के शौर्य्य का बखान सुन, अपनी पुत्री तथा वीरवर प्रताप की बहिन जसमादे का नारियल रायसिंहजी को भेज दिया।

रायसिंहजी विवाह के लिए चितौड़ आये। महाराणा चितौड़ की तलहटी से अढ़ाई कोस दूरी तक पेशवाई में आये। दूर-दूर से चारण आदि लोग इस विवाह में आये थे। रायसिंहजी ने उपस्थित कवियों को त्याग में एक लाख रुपये बाँटे। सं० १६३१ में माघ सुदी ५ को विवाह सम्पन्न हुआ। विवाह होने पर राजा

रायसिंहजी अपनी नवविवाहिता पत्नी से मिलने के लिए प्रथम रात्रि को चितौड़ के जनाना महलों में पधारे। जनानी ड्योढ़ी में घुसने पर ऊपर महल में जाने के लिए दो जीने थे। महाराणा के रनिवास की बडारण (दासियों की मुखिया) वहाँ खड़ी थी। रायसिंहजी एक सीढ़ी पर चढ़ने लगे तो बडारण ने अर्ज की—"ऊपर महल में जाने के लिए दो जीने हैं। हमारे यहाँ की परम्परा के अनुसार दामाद प्रथम मिलन के लिए अपनी पत्नी के महलों में जाते हैं तो इस जीने से होकर वे ही जाते हैं जो एक एक पेड़ी पर एक-एक हाथी कवियों को दान करते जाते हैं। इसलिए आप दूसरे जीने से चढ़कर ऊपर पधारें।" यह सुनते ही राजा रायसिंहजी ने कहा, "मैं इसी जीने से चढ़ूँगा।"

उस जीने में पचास पैड़ियाँ थीं। राजा रायसिंहजी एक-एक पैड़ी पर एक-एक हाथी और दस-दस घोड़े कवियों को दान करते हुए पचास पैड़ी पार कर ऊपर अपनी पत्नी के पास पधारे। उस प्रसंग का एक गीत इस प्रकार हैं—

रायसींघ चीतगढ़ राणा।
वरमाला लेवा जिण बार।
पदमण महल तलाक पंडता
जग चै नयण दिया जूथार॥
पदमण महल पोढ़तां पहली
अेरापत देतैं इक आग।
इलपत रासै चित आळोभै
नग नग पैड़ी दीना नाग॥

कवियों में दूदा आसिया, देवराज रतनूं, अखैजी बारहठ, लाखैजी बारहठ भूला साईंयां, गोंपे तूंकारो सिढ़ायच आदि प्रसिद्ध विद्वान चारण कवि थे।

५—कवि-वाणी का चमत्कार :

उदयपुर के महाराणा स्वरूपसिंहजी चितौड़ पधारे हुए थे। उनके साथ कई सामन्त थे। महाराणा किले पर विराजे थे। साथ वाले कई सामन्तों ने भी किले पर अपने डेरे लगा रखे थे। देवगढ़ के रावत रणजीतसिंहजी ने अपना डेरा तलहटी में लगा रखा था। उन्होंने अपने लिए लालरंग का डेरा लगाया। उसका लाल रंग का बाड़ा था और कंगूरों का रंग सफेद था।

इस रंग का डेरा शाही डेरा कहलाता था। इसे लगाना एक बड़ा अपराध था। पहले तो केवल बादशाह ही ऐसे रंग का डेरा लगाता था और कोई नहीं लगा सकता था। बाद में मुगल बादशाह के निर्बल हो जाने पर राजस्थान के राजा भी ऐसा डेरा अपने लिए लगाने लग गये। देवगढ़ रावत रणजीतसिंहजी का ऐसा डेरा लगाना तत्कालीन राज्य नियमानुसार एक गुनाह था। रावत रणजीतसिंहजी को अपनी ताकत का अभिमान ज्यादा था। उन्होंने कहा—"हम लाल डेरा क्यों नहीं लगावें? राणाजी लगा सकते हैं तो हम भी लगा सकते हैं।"

महाराणा स्वरूपसिंहजी ऊपर किले में घूम रहे थे। उनकी नजर नीचे तलहटी में पड़ी और लाल डेरा, सफेद कंगूरों वाला

नजर आया। उन्होंने सोचा, "प्रबन्ध करने वालों ने इस विचार से कि कहीं महाराणा नीचे तलहटी में रहना पसन्द करें, लाल डेरा लगा दिया है।" महाराणा बोले, "हम तो यहाँ ऊपर ही रहेंगे, नीचे लाल डेरा व्यर्थ में क्यों लगा रखा है?"

रणजीतसिंहजी के लाल डेरा लगाने से कई लोग जले हुए तो थे ही। उन्होंने अर्ज की, "बड़ो हुकम, यह डेरा तो देवगढ़ रावतजी का है।"

ऐसा सुनते ही महाराणा क्रोध से आग-बबूला हो गये और बोले, "अच्छा, यहाँ तक? समझ लूंगा।" सुनने वालों में से किसी ने आकर रणजीतसिंहजी से सारे समाचार कहे। रणजीतसिंहजी समझ गये, आगे क्या होने वाला है। उन्होंने अपने लश्कर को देवगढ़ चले जाने को कहा और वहाँ से रवाना हो गये। महाराणा ने भी दूसरे ही दिन अपना डेरा उठा दिया और उदयपुर चले गये।

संयोग की बात महाराणा के लश्कर और रावत रणजीतसिंहजी की जमीअत (ठिकाने की सेना) का मार्ग में आमना-सामना हो गया। रणजीतसिंहजी पालकी में जा रहे थे। सामने से महाराणा की सवारी आई। चाहिए तो यह था कि रणजीतसिंहजी महाराणा साहब के सामने पालकी में नहीं बैठे रहते लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। जिस तरफ महाराणा का हाथी था उस ओर का पालकी का परदा डाल दिया। महाराणा का

हाथी पास से होकर निकला। रणजीतसिंहजी की इस अवज्ञा ने महाराणा के क्रोध में घी का काम किया।

उन्होंने उदयपुर पहुंचते ही देवगढ़ पर सेना भेजने का हुक्म दे दिया। फौज रवाना हुयी। कूच का नक्कारा बजा। महाराणा के दरबार में कवि राव बख्तावर रहते थे। उन्होंने सेना चढ़ती देखी तो सोचा, यह उचित नहीं। इस गृह-कलह का नतीजा अच्छा नहीं होगा। इसी तरह के गृह-कलह के फल मेवाड़ चख चुका है। उन्होंने वाक्चातुर्य का सहारा लिया और उसी समय कवित्त रचकर महाराणा को सुनाया—

जरैं ही जंजीरन तैं द्वारकी उदारता दें,
हिलैं निज दल के संहार कीजियत है।

कानन विकाटन पै महानद घाटन में,
भूरज कपाटन पै हूल दीजियत है।

बखत भनन्त भूमिपालन की रीति यह,
रूद्रता प्रचंड पै सदा ही रीझियत है।

एक मतवालो होय आंगछ न मानै, कहा,
दुरद दरबारन तें दूर कीजियत है।

(यदि एक हाथी मतवाला होकर अंकुश नहीं मानता है, तो क्या इसे निकाल थोड़े ही दिया जाता है ? ऐसे मतवाले हाथी ही समय पर काम आते हैं। वोहड़ जंगलों में वेग से चढ़ी हुई

महानदियों में, मतवाले ही आगे बढ़ते हैं। तीक्ष्ण भाले जड़े दुर्ग के कपाटों पर मदोन्मत्त हाथी को ही हुला जाता है। निरंकुश मस्त हाथी को निकालना नहीं चाहिए। उसका तो उपयोग कर लेना चाहिए। राजागण तो प्रचण्ड बाहुबल वालों की कद्र करते ही आये हैं। यदि आपका भी एक सामन्त ऐसा मदोन्मत्त हो गया तो उसे समाप्त करने की चेष्टा न करें। देश के विपद् के समय में ऐसे ही मदोन्मत्त आगे बढ़ेंगे।)

कवि की उक्ति ने जादू का काम किया। उसी समय महाराणा ने सेना को रोक देने का हुक्म दे दिया।

—०—

लोक सुभाषित

प्रीत बिहूणी राख लुगाई, हेत बिहूणो राख सगो।
आग बिहूणी राख तमाखू, पाघ बिहूणो राख भुगो।

❀

दांतण मिंत पिछाणिये, सगो सांकड़ी बार।
तिरिया नै पिछाणिये, जद निरधन भरतार॥